मासिक पत्रिका

RNI.No. MPHIN/99/796

सार्थक संवाद

वर्ष 27, अंक 12 भोपाल, फरवरी-2026 मूल्य-10 /-

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. वाजपेयी के सार्वजनिक जीवन में सुचिता और पारदर्शिता रही सर्वोपरि-शाह

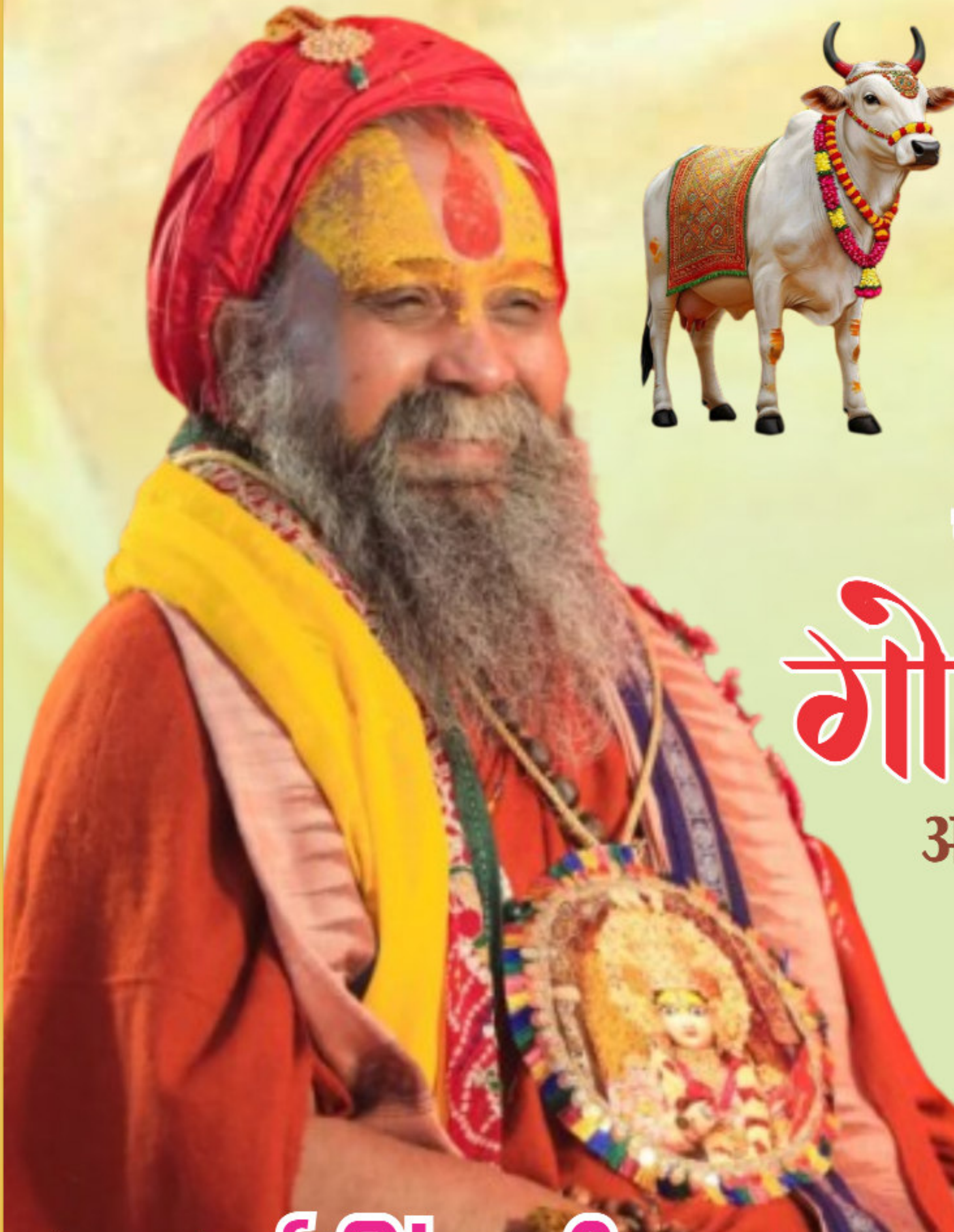

देश का पहला अनोखा

अभियान

गौ सम्मान

आह्वान अभियान

धन्य हुई विंध्य की धरा

जब जब होई धरम की हानि, बाढ़हि असुर अधम अभिमानी।
तब तब धरी प्रभु विविध शरीरा, हरहि दयानिधि सज्जन पीरा।।

बसामन मामा में बसाया भारत

राजेन्द्र शुक्ला

उप मुख्यमंत्री (म.प्र. शासन)

संकल्प से मूर्त रूप : परियोजना का स्वरूप

राजेन्द्र शुक्ल के संकल्प ने जब नीति का आकार लिया, तब उसका पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण चरण थाउसे धरातल पर उतारना। ग्राम पुरवा, तहसील सेमरिया, जिला रीवा में लगभग 20.437 हेक्टेयर भूमि पर 17 जुलाई 2018 को बसामन मामा गौवंश वन्य विहार की स्थापना इसी दृष्टि का प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रारंभ में मात्र 25 निराश्रित गौवंश के साथ आरंभ हुई यह पहल किसी आकस्मिक विस्तार का परिणाम नहीं थी, बल्कि चरणबद्ध, सुविचारित और दीर्घकालिक योजना का हिस्सा थी।

समय के साथ यह परियोजना निरंतर विकसित होती गई और आज यहाँ१०,000 से अधिक गौवंश सुरक्षित एवं सम्मानजनक आश्रय प्राप्त कर रहे हैं। संरचनात्मक रूप से इसे 25,000 गौवंश की क्षमता तक विकसित करने की योजना के साथ आगे बढ़ाया गया है, ताकि भविष्य में भी निराश्रित गौवंश की समस्या का स्थायी समाधान संभव हो सके। इस पूरे स्वरूप में स्पष्ट रूप से यह दृष्टि दिखाई देती है कि गौ-संरक्षण केवल तात्कालिक राहत नहीं, बल्कि विंध्य क्षेत्र के लिए दीर्घकालिक सामाजिक और पर्यावरणीय समाधान बने।

यह परियोजना पाँच मूल स्तंभों पर आधारित है

गौ संरक्षण

वन संवर्धन

ऊर्जा आत्मनिर्भरता

प्राकृतिक खेती

महिला आजीविका

जो इसे एक समेकित विकास मॉडल का रूप प्रदान करते हैं।

RNI No. MPHIN/99/796

मासिक पत्रिका

सार्थक संवाद

वर्ष-27 अंक-12 भोपाल, फरवरी-2026 मूल्य-10/-

संपादक
देवदत्त दुबे

◆

प्रबंध संपादक
सुदेश तिवारी

◆

मानसेवी संपादक
डॉ. बद्रीप्रसाद, डॉ. सुरेंद्र पाठक

◆

उप संपादक
दिनेश दुबे, विनोद आर्य

◆

विशेष संवाददाता
भोले गुप्ता, शेख जावेद

◆

प्रबंधक
अतुल दुबे

◆

खेल संवाददाता
नितिन कोरपाल

◆

ब्यूरो प्रमुख
सुरेंद्र मिश्रा (भोपाल), सविता दुबे (कटनी),
धर्मेश त्रिपाठी (टीकमगढ़),
राजधर (रहली)
राजू पाण्डेय, सुशील जैन

◆

प्रधान कार्यालय
बी-129, कन्हैया अपार्टमेंट, फ्लेट नं. 103, शाहपुरा,
भोपाल (म.प्र.) मो. : 9425171001
Email : devduttdubey111@gmail.com

◆

रायपुर कार्यालय
एफ-2 प्रगति बिहार, महावीर नगर, न्यू पुरैना, रायपुर
(छत्तीसगढ़)

धन्य हुई विंध्य की धरा

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. वाजपेयी के सार्वजनिक जीवन में शुचिता और पारदर्शिता रही सर्वोपरि -केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शाह

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक देवदत्त दुबे द्वारा बी-129, कन्हैया अपार्टमेंट, फ्लैट नं. 103, शाहपुरा, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं 131, लेक सिटी ग्राफिक्स, डायनामिक सेन्टर, जोन-1, एम. पी. नगर, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक-देवदत्त दुबे। पत्रिका में प्रकाशित लेखों की जिम्मेदारी लेखक की है। प्रकाशक एवं संपादक का लेखक से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा भोपाल की सीमा में आने वाली समक्ष अदालतों एवं फोरमों में ही किया जायेगा।

संपादकीय

बसामन मामा में महत्वपूर्ण आयोजन...

यह कलयुग है और कलयुग में भक्तमाल कथा का बहुत महत्व है भक्तमाल कथा कलयुग में भक्ति का संदेश देती है साथ ही भागवत कथा का मानव जीवन में अलग ही महत्व है कथा सुनने से मोक्ष की प्राप्ति एवं मन का शुद्धिकरण होता है इसी तरह कलयुग में भवसागर पार करने के लिए केवल गाय की पूंछ पकड़ने से काम नहीं चलेगा गौ सेवा गौ संरक्षण और गौ संवर्धन आवश्यक है कुछ इसी तरह इस भौतिकवादी युग में हम प्रतिस्पर्धा में इतने खो गए हैं कि अब हमें शुद्ध भोजन भी प्राप्त नहीं होता रासायनिक खादों को डालकर जो भी फसले उगाई जा रही है उससे मानव जीवन में बीमारियां बढ़ रही है इसके लिए प्राकृतिक खेती जरुरी है और यह बहुत ही सुखद संयोग है कि रीवा के बसामन मामा गो वन्य विहार में 12- 13 और 14 फरवरी को अनंत श्रीविभूषित श्री मजजगदगुरु द्वाराचार्य श्रीअग्र पीठाधीश्वर एवं श्री मलूक पीठाधीश्वर परम पूज्य श्री श्री 108 स्वामी डॉक्टर राजेंद्र दास देवाचार्य जी महाराज गौ सेवा भक्तमाल कथा और प्राकृतिक खेती के महत्व पर प्रवचन देंगे यहां बताते चलें कि डॉ राजेंद्र दास जी सनातन के सर्वमान्य संत माने जाते हैं शास्त्र आधारित बात रखने वाले महाराज जी को आजकल देश दुनिया में विभिन्न माध्यमों से लाखों करोड़ों लोग सुनकर अपना जीवन बदल रहे हैं विंध्य की धरा पर पहली बार महाराज जी का आगमन हो रहा है उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला के सतत प्रयासों से जहां बसामन मामा गो वन्य विहार सभी का ध्यान आकर्षित कर रहा है वही महाराज जी की तीन दिवसीय कथा के दिव्य आयोजन से इस प्रकल्प को और भी ऊंचाइयां मिलेंगी आज देश में महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम राजनीतिक लोग ही हैं क्योंकि प्रदेश में ये ही सरकार चलाते हैं और कोई राजनीतिज्ञ यदि इस तरह के प्रयास करते हैं तो निश्चित ही देश की जिस तरह से महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान हुआ है वैसे ही गौ हत्या पर प्रतिबंध लगाने गो मांस निर्यात पर प्रतिबंध लगाने की दिशा में भी होना चाहिए यह दिव्य आयोजन वैसे समय हो रहा है जब पूरे देश में गो सम्मान आह्वान अभियान चलाया जा रहा है अध्यात्म और राजनीति की सफलता तभी कहीं जा सकती है जब यह अभियान सफल हो जाए। -**देवदत्त दुबे**

धन्य हुई विंध्य की धरा

जब जब होई धर्म की हानि,
बाढ़हि असुर अधम अभिमानी।
तब तब धरी प्रभु विविध शरीरा,
हरहि दयानिधि सज्जन पीरा।।

अर्थात जब-जब पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है दुष्टों और अभिमानियों का प्रभाव बढ़ने लगता है तब तब सज्जनों की पीड़ा को हरने के लिए करुणा निधान प्रभु श्री राम काल समय परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग रूपों में अवतार लेते हैं

आज जब पूरी दुनिया में उथल-पुथल है बेचैनी है अक्षम्य अपराध हो रहे हैं जिसकी कभी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी ऐसे ऐसे अपराध बच्चियों के साथ हो रहे हैं जिस गौ माता में 33 कोटि देवता निवास करते हैं जो सनातन का मजबूत आधार है वह गौ माता सड़कों पर मारी मारी घूम रही है ऐसे और भी अनेकों दुष्टता और अभिमान की घटनाएं देखने और सुनने को मिल रही है ऐसे दौर में तपस्वी संत निरंतर प्रवास पर रहकर कथाओं के माध्यम से समाज को जागृत कर रहे हैं ऐसे ही महान तपस्वी केवल और केवल शास्त्र आधारित बात रखने वाले देश और दुनिया में गौ सेवा की अलख जगाने वाले अनंत श्री विभूषित श्री मजजगदगुरु द्वारा आचार्य रामानंद संप्रदाय की सबसे बड़ी एवं प्रतिष्ठित रेवासा पीठ के पीठाधीश्वर एवं श्री मलूक पीठाधीश्वर परम पूज्य डॉ राजेंद्र दास देवाचार्य जी इस समय पूरे देश और दुनिया में जिस तरह से मार्गदर्शन कर रहे हैं प्रतिदिन लाखों लोग उनको विभिन्न माध्यमों से सुन रहे हैं अधिकांश अनुयायी ईश्वरीय अवतार माना रहे हैं ऐसे संत भगवान विंध्य की धरा पर पहली बार आ रहे हैं जिससे विंध्य की धरा भी अपने आप को धन्य मान रही है और यह अवसर विंध्य क्षेत्र को दिलाया है मध्य प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री एवं लोक स्वास्थ्य कल्याण मंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने जिन्होंने 2016 में लोक देवता बसामन मामा के नाम से बसामन गोवंश वन्य विहार गोवंश को समर्पित किया जहां बूढ़ी बीमार अपंग असहाय गौ माता की सेवा की जाती है उनके लिए प्राकृतिक वातावरण मिला है जहां वे स्वच्छंद विचरण करती है जहां 10000 से ज्यादा गोवंश है लगभग 51 एकड़ की भूमि में

यह गो अभ्यारण है गोवंश की सेवा सुश्रा प्रशिक्षित कर्मचारियों द्वारा पूरे समर्पण भाव से की जाती है यहां हजारों गोवंश का संरक्षण और संवर्धन हुआ है।

यही नहीं यहां पर गौ आधारित प्राकृतिक खेती भी की जा रही है यही कारण है की 12 फरवरी से 14 फरवरी तक बसामन मामा गोवंश वन्य विहार पुरवा सिमरिया रीवा में श्री परम पूज्य श्री

स्वामी डॉक्टर राजेंद्र दास देवाचार्य जी महाराज की गौ कथा गो आधारित प्राकृतिक खेती और सनातन मूल्यों को नई दिशा देने की दृष्टि से यह दिव्य आयोजन विंध्य क्षेत्र के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगा।

आज सोशल मीडिया के माध्यम से हमें हजारों संतों की कथाएं सुनने को मिलती हैं कुछ ऐसे भी संत हैं जिनकी वाणी का प्रभाव आमजन के अंदर तक पड़ता है और जीवन में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगता है क्योंकि लगातार तपस्वी जीवन जीने के कारण उनकी वाणी और उनके चेहरे पर वह तेज आ जाता है जिससे हर कोई प्रभावित होता है जुड़ना चाहता है अनुसरण करना चाहता है परंपराएं भी अनेक है लेकिन अधिकांश एक विशेष क्षेत्र तक सीमित है अनेक गुरुओं की वंशावली है जो समाज के उत्थान के लिए ज्ञान का प्रकाश पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ने का कार्य कर रहे हैं और इस ज्ञान को आगामी पीडिया तक बढ़ाने के उद्देश्य से ही गुरु द्वारा शिक्षक को हस्तांतरित करने की परंपरा है लेकिन आमजन से लेकर शिष्यों और संत समाज को को इस समय सर्वाधिक प्रभावित किया है अनंत श्री विभूषित श्रीमजजगदगुरु द्वाराचार्य श्री अग्र पीठाधीश्वर एवं श्रीमलूक पीठाधीश्वर परम पूज्य स्वामी श्री राजेंद्र दास देवाचार्य जी महाराज ने जिन्होंने विश्वास की स्थापना का सबसे बड़ा पुण्य कार्य किया है देश और दुनिया में गौ सेवा की अलख जगाने वाले देवाचार्य नाम जप श्रवण सत्संग और गौ सेवा के माध्यम से जीवन उद्धार की सरल राह बता रहे हैं आमजन का ही नहीं सज्जन शक्तियों का संत समाज का डॉक्टर राजेंद्र दास जी पर अटूट विश्वास है वे जहां भी कथा करने जाते हैं संत समाज पहले से ही वहां पहुंच जाता है कुछ इस तरह से जैसे सुखदेव जी भगवान के पीछे संत समाज चलता था डॉ राजेंद्र दास जी पर कितना अटूट विश्वास संत समाज का है इसे मेसेज समझा जा सकता है कि देश की सबसे बड़ी पीठ रेवासा धाम के अग्र पीठाधीश्वर राघवाचार्य जी महाराज ने 2015 में जयपुर में डॉक्टर राजेंद्र दास जी की कथा सुनी और लौटकर जाकर वसीयत लिख दी यह वसीयत सांसद घनश्याम तिवारी को सौंप दी और साथ में यह भी कहा कि यह वसीयत तब खोलना जब मैं इस दुनिया से चला जाऊं क्योंकि राघवचार्य को यह पक्का विश्वास था कि मेरे जीते जी यह वसीयत खुल गई तो फिर जिसके लिए हमने यह वसीयत लिखी है वह स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि वे तो इस दुनिया की मोह माया से मुक्त है यहां तक कि वे वृंदावन छोड़कर कहीं जाना भी नहीं चाहते लेकिन लोगों के समाज के गौ माता के कष्ट देखकर वे अपने कष्ट को भूलकर दिन-रात परिश्रम और भाग दौड़ कर रहे हैं जबकि पिछले वर्षों में डॉक्टर ने उन्हें आराम करने और कम बोलने की सलाह दी थी अब आप समझ ही गए होंगे कि यहां हम बात डॉ राजेंद्र दास जी महाराज की कर रहे हैं और इन्हीं के नाम की वसीयत राघवाचार्य महाराज लिख कर गए थे जब 2024 में राघवाचार्य महाराज का देवलोक गमन हुआ तब सांसद घनश्याम तिवारी ने वह वसीयत खोली और राघवाचार्य जी के अंतिम संस्कार के लिए वृंदावन से रेवासा धाम राजेंद्र दास जी महाराज को बुलाया गया और राजेंद्र दास जी महाराज ने कहा कि यदि राघवाचार्य जीवित होते तो मैं उनसे विनती कर लेता कि यह जिम्मेदारी मुझे मत दीजिए कहने का तात्पर्य है कि आज भी देश में महान संत अपना कार्य कर रहे हैं हमें केवल उनके बताए रास्ते पर चलने की जरूरत है।

देवदत्त दुबे

संत सम्मेलन में गुरु जी एवं संघ प्रमुख मोहन भागवत की भेंट

योग गुरु बाबा रामदेव, गुरु जी से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए।

गुरु जी की गृहमंत्री अमित शाह जी से सौजन्य भेंट

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. वाजपेयी के सार्वजनिक जीवन में शुचिता और पारदर्शिता रही सर्वोपरि : केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शाह

केंद्रीय मंत्री श्री शाह और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रीवा में कृषक सम्मेलन को किया संबोधित

बसामन मामा प्राकृतिक खेती प्रकल्प विंध्य के किसानों के लिए बनेगा मार्गदर्शक

प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को 9 से बढ़ाकर किया जायेगा 20 प्रतिशत तक

केंद्र सरकार द्वारा प्रारंभ की जा रही हैं वृहद स्तर पर प्रयोगशालाएं

केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि भारत रत्न से सम्मानित पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के सार्वजनिक जीवन में शुचिता और पारदर्शिता का स्थान सर्वोपरि रहा है। उन्होंने कहा कि स्व. वाजपेयी ने सुशासन की स्थापना के लिये अपने कार्यों से नये आयाम स्थापित किये। उन्होंने जो कहा उसे धरातल साकार करके दिखाया।

भोपाल। केन्द्रीय मंत्री श्री शाह ने कहा कि भारतीय राजनीति में स्व. वाजपेयी का स्थान और योगदान दोनों ही अद्वितीय है। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. वाजपेयी को रीवा से सदैव विशेष लगाव रहा। केन्द्रीय मंत्री श्री शाह रीवा में बसामन मामा गौ वन्य विहार अभयारण्य में प्राकृतिक खेती के प्रकल्प का शुभारंभ कर कृषक सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि बसामन मामा प्राकृतिक खेती प्रकल्प विंध्य के किसानों के लिये मार्गदर्शक बनेगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने संबोधित करते हुये कहा कि केन्द्रीय सहकारिता एवं गृह मंत्री श्री शाह के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश के किसानों की आय को बढ़ाने के लिये राज्य सरकार द्वारा समन्वित तरीके से सतत समग्र प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में दूध के उत्पादन को 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक किया जायेगा। केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री शाह और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हितग्राहियों को हितलाभ एवं संकल्प पत्रों को वितरण किया।

केंद्रीय मंत्री श्री शाह ने कहा कि मध्यप्रदेश का रीवा क्षेत्र धीरे-धीरे विकसित क्षेत्र बन रहा है। आज एशिया का सबसे बड़ा सोलर प्लांट रीवा में है। रीवा से जबलपुर तक सड़कों के जाल सहित इंदौर और दिल्ली के लिये वायु सेवा का भी विस्तार हुआ है। अब रीवा एयरपोर्ट से इंदौर और दिल्ली के लिए 24 घंटे हवाई सेवा उपलब्ध है। रीवा में बसावन मामा गौवंश वन्य विहार के रूप में अनुकरणीय प्रकल्प तैयार किया गया है। यहां गोबर से बने खाद से प्राकृतिक खेती की जा रही है। एक एकड़ में सवा लाख रुपए की आय देने का यह प्रयोग छोटे किसानों को बड़ा लाभ प्रदान करेगा। किसान इस मॉडल को अपनाएंगे तो उनकी आय बढ़ेगी। राज्य सरकार प्रगतिशील किसानों को इस परंपरागत मॉडल से अवगत कराने के लिये उनका भ्रमण कराये। उन्होंने कहा कि एक देशी गाय से 21 एकड़ रकबे में प्राकृतिक खेती होती है। किसान ही अन्नदाता है। अन्नदाता को प्राकृतिक खेती के लिये प्रेरित करने के साथ ही प्रोत्साहित करने के समग्र प्रयास हम सबको समन्वित तरीके से करना है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुये कहा कि अनाज के उत्पादन में रासायनिक खाद और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग के कारण कई तरह की बीमारियां बढ़ रही हैं। इससे बचाव के लिये जरूरी है कि हम सभी प्राकृतिक के संवर्धन में अपना योगदान दें।

केंद्रीय मंत्री श्री शाह ने कहा कि प्राकृतिक खेती को अपनाने से उत्पादन कम नहीं होता है। मैंने स्वयं अपने खेतों में प्राकृतिक खेती को अपनाया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में सहकारिता मंत्रालय के अंतर्गत वृहद स्तर पर प्राकृतिक खेती की उपज के प्रमाणीकरण का कार्य किया जा रहा है। केंद्र सरकार ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये प्राकृतिक खेती के माध्यम से उत्पादित उपज के सर्टिफिकेशन, पैकेजिंग और मार्केटिंग की व्यवस्था की है। आगामी समय में देश में 400 से अधिक प्रयोगशालाएं किसान को प्राकृतिक खेती से संबंधित प्रमाण-पत्र प्रदान करेंगी। इन सभी प्रयासों से प्राकृतिक खेती अपनाने वाले किसानों की आय डेढ़ गुना तक बढ़ जाएगी। दुनियाभर में प्राकृतिक खेती का बड़ा बाजार है। आर्गेनिक अनाज खाने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। भूमि परीक्षण से सर्टिफिकेशन, उपज का परीक्षण, बेहतर पैकेजिंग और मार्केटिंग किसानों को उपज का बेहतर मूल्य दिलाएंगी। हम किसानों की आय को बढ़ाने के लिए समुचित प्रयास प्राथमिकता से कर रहे हैं। निदर्शन फॉर्म आने वाले समय में प्राकृतिक खेती के लिए किसानों का मार्गदर्शन करेंगे।

केंद्रीय मंत्री श्री शाह ने कहा कि प्रकृति की अनेक प्रकार से सेवा हो सकती है। हमें बसावन मामा की स्मृति में पीपल के वृक्ष रोपित करने का संकल्प लेना चाहिए। दुनिया से चले जाने के बाद भी यह पीपल वृक्ष लोगों को ऑक्सीजन देता रहेगा। पीपल का वृक्ष लगाना पुण्य कार्य है, जिसमें स्वयं भगवान विष्णु का वास होता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कृषकों से प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये बढ़-चढ़कर सहभागिता करने का आहवान किया। उन्होंने बताया कि बसावन मामा गौवंश वन्य विहार के भ्रमण के दौरान केंद्रीय मंत्री श्री शाह के द्वारा 35 साल पहले गुजरात में जैविक खेती संवर्धन के लिये जानकारी मिली। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय मंत्री श्री शाह के द्वारा 35 साल पहले शुरू किये गये कार्य को राज्य सरकार आगे बढ़ाने में कोई कसर नहीं रखेगी।

केन्द्रीय मंत्री श्री शाह के मार्गदर्शन में सहकारिता से किसानों की बढ़ा रहे हैं आय - मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार किसान कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। केंद्रीय गृह मंत्री श्री शाह के मार्गदर्शन में सहकारिता के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाई जा रही है। प्रदेश के किसानों की आय को बढ़ाने के लिये उन्हें दुग्ध उत्पादन के लिये भी प्रेरित किया जा रहा है। इसके लिये डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना से किसानों को लाभांवित किया जा रहा है। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड से एमओयू किया गया है। इससे किसानों को सीधे लाभ मिलेगा। राज्य सरकार दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए नस्ल सुधार जैसे अनेक कार्य भी कर रही है। राज्य सरकार दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए नस्ल सुधार जैसे अनेक कार्य भी कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य में दूध खरीद का आंकड़ा निरंतर बढ़ रहा है। साल भर में प्रति दुग्ध संघ दूध खरीदी में 25 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। राज्य सरकार ने प्रदेश स्तर पर कुल दुग्ध उत्पादन को 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा है।

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि गौमाताओं के संरक्षण के लिए प्रति गाय आहार अनुदान को 20 से बढ़ाकर 40 रुपए किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अटलजी की जन्म जयंती के अवसर पर ग्वालियर में 2 लाख करोड़ से अधिक के निवेश से अनेक कार्यो के लिए भूमि-पूजन किया गया है। राज्य सरकार आगामी वर्ष 2026 को कृषि वर्ष के रूप में मनाने जा रही है। हमारी सरकार किसान कल्याण के लिए कृत संकल्पित है।

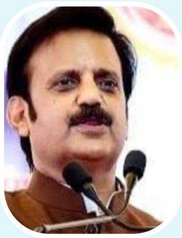

उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ला ने कहा कि गौशाला की 9 हजार से अधिक गौमाताओं ने श्री अमित शाह को बुलाया है। गाय में 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास होता है। गौमाता के गोबर से खाद बनाकर प्राकृतिक खेती की जा सकती है। जब धरती माता और नागरिक स्वस्थ होंगे, तभी भारत आत्मनिर्भर और समृद्ध होगा। राज्य सरकार प्राकृतिक खेती, गौसेवा और गौसंवर्धन को जन आंदोलन बनाने की दिशा में कार्य कर रही है।

वरिष्ठ विधायक एवं प्रदेशाध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. वाजपेयी की जयंती पर रीवा में कृषक और सहकारिता सम्मेलन का आयोजन स्व. वाजपेयी के रीवा के प्रति लगाव के लिये सच्ची श्रद्धांजलि है। विंध्य की पावन धरा पर कृषक और सहकारिता सम्मेलन आयोजित हो रहा है। केन्द्र सरकार और प्रदेश सरकार के संकल्प से प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिल रहा है। इससे किसान समृद्ध होंगे। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय मंत्री श्री शाह ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार के एक अभिनव मिशन की शुरुआत की है।

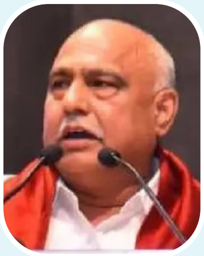

किसान सम्मेलन में रीवा के प्रभारी एवं पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल, सांसद श्री जनार्दन मिश्र, विधायक सर्वश्री नागेन्द्र सिंह, दिव्यराज सिंह, नरेन्द्र प्रजापति, सिद्धार्थ तिवारी, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल, जनप्रतिनिधि श्री महेन्द्र सिंह, श्री वीरेन्द्र गुप्ता स्थानीय जनप्रतिनिधि और वरिष्ठ प्रशासनिक व पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

बसामन मामा में बसाया भारत

-दिनेश दुबे

प्राचीन भारत की जो तासीर थी और भविष्य के भारत के लिए जिस तासीर की आवश्यकता है वह बसामन मामा में बसती है क्योंकि यहां पर गो संरक्षण गो संवर्धन प्राकृतिक खेती लोक आस्था की त्रिवेणी एक साथ दिखाई देती है जिसकी देश दुनिया को महती आवश्यकता है।

मध्य प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला के इन प्रयासों के बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि विकास वही टिकाऊ है जो प्रकृति और परंपरा के साथ संतुलन में हो उन्होंने देश का आह्वान किया है कि हमें अपनी खेती को केमिस्ट्री की लैब से बाहर निकाल कर प्रकृति की

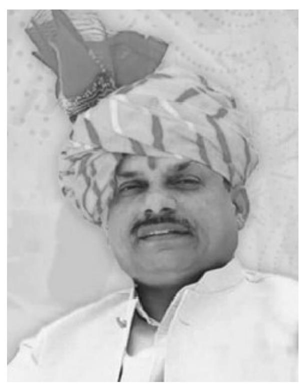

लैब से जोड़ना होगा प्रधानमंत्री के अनुसार स्वच्छ भारत मिशन गोवर्धन योजना और प्राकृतिक खेती केवल सरकारी योजनाएं नहीं बल्कि एक ऐसी सोच की अभिव्यक्ति है जहां गौ ग्राम और ग्रीन इकोनामी एक दूसरे के पूरक बनते हैं इसी राष्ट्रीय विमर्श और विजन से प्रेरणा लेकर बसामन मामा गोवंश वन्य बिहार की परिकल्पना की गई ताकि निराश्रित गोवंश की समस्या को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की शक्ति में बदला जा सके। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि बसावन मामा गोवंश वन विहार छोटे और सीमांत किसानों को प्राकृतिक खेती के माध्यम से सशक्त बनाने का एक सफल प्रयोग है प्राकृतिक खेती से किसानों की आय बढ़ेगी जल संरक्षण होगा और उपभोक्ता विभिन्न बीमारियों से सुरक्षित रहेंगे सहकारिता मंत्रालय ने जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण परीक्षण पैकेजिंग विपणन और निर्यात के लिए दो बड़ी सहकारी संस्थाएं बनाई है रीवा क्षेत्र में स्थापित है मॉडल फार्म न केवल लाखों किसानों का मार्गदर्शन करेगा बल्कि प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका भी निभाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का कहना है कि राज्य का विकास सनातन संस्कृति प्रकृति संरक्षण और ग्रामीण आत्मनिर्भरता के साथ संतुलन बनाकर आगे बढ़े सरकार मानती है कि गौआधारित अर्थव्यवस्था प्राकृतिक खेती और ग्राम केंद्रित विकास मॉडल न केवल किसानों की आय बढ़ाते हैं बल्कि सामाजिक स्थिरता और सांस्कृतिक निरंतरता को भी मजबूत करते हैं इसी सोच के अनुरूप बसावन मामा गोवंश वन्य विहार जैसी पहलें प्रदेश में संवेदनशील टिकाऊ और मूल्य आधारित विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

अपने प्रकल्प के बारे में उपमुख्यमंत्री डॉ राजेंद्र शुक्ल का कहना है कि सनातन परंपरा में गौ रक्षा को केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं बल्कि राष्ट्र जीवन के संतुलन से जोड़ा गया है यही कारण है कि स्वतंत्र भारत के नेतृत्व में भी को संरक्षण प्राकृतिक जीवन शैली को पुन: राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बनाया है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के इसी राष्ट्रीय दृष्टि से प्रेरित होकर हमने संकल्प लिया कि विंध्य क्षेत्र का विकास उसकी संस्कृत आत्मा से कटकर नहीं बल्कि उसी से शक्ति प्राप्त कर आगे बड़े गौ सेवा को सनातन संस्कृति पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण आजीविका तीनों का साजा सूत्र बनाया है यह संकल्प केवल विचार नहीं 17 जुलाई 2018 को ग्राम पुरवा में बसामन मामा गोवंश वन विहार की स्थापना के साथ ही यह राष्ट्रीय सोच स्थानीय संरचना में संरचना में परिवर्तित हुई जहां पौराणिक गौतत्व लोक आस्था और आधुनिक प्रशासनिक मॉडल एक साथ साकार हुए।

बसामन मामा गौवंश वन्य विहार में श्री राजेन्द्र दास जी करेंगे गौ कथा एवं गौ आधारित प्राकृतिक खेती पर कथा

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने की तैयारियों की समीक्षा की

कार्य को राज्य सरकार आगे बढ़ाने में कोई कसर नहीं रखेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार किसान कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री शाह के मार्गदर्शन में सहकारिता के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाई जा रही है। प्रदेश के किसानों की आय को बढ़ाने के लिये उन्हें दुग्ध उत्पादन के लिये भी प्रेरित किया जा रहा है। इसके लिये डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना से किसानों को लाभांवित किया जा रहा है। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड से एमओयू किया गया है। इससे किसानों को सीधे लाभ मिलेगा। राज्य सरकार दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए नस्ल सुधार जैसे अनेक कार्य भी कर रही है। राज्य सरकार दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए नस्ल सुधार जैसे अनेक कार्य भी कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य में दूध खरीद का आंकड़ा निरंतर बढ़ रहा है। साल भर में प्रति दुग्ध संघ दूध खरीदी में 25 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। राज्य सरकार ने प्रदेश स्तर पर कुल दुग्ध उत्पादन को 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा है। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि गौमाताओं के संरक्षण के लिए प्रति गाय आहार अनुदान को 20 से बढ़ाकर 40 रुपए किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अटलजी की जन्म जयंती के अवसर पर ग्वालियर में 2 लाख करोड़ से अधिक के निवेश से अनेक कार्यों के लिए भूमि-पूजन किया गया है। राज्य सरकार आगामी वर्ष 2026 को कृषि वर्ष के रूप में मनाने जा रही है। हमारी सरकार किसान कल्याण के लिए कृत संकल्पित है।

संत वह व्यक्ति है जिसने अपने मन, इंद्रियों और अहंकार पर विजय पा ली हो और जिसका जीवन सत्य, प्रेम और करुणा पर आधारित हो।1.
आत्मिक शुद्धि और सादगी
संत वह नहीं है जो केवल गेरुए वस्त्र पहने, बल्कि वह है जिसका अंतर्मन शुद्ध हो। उनके विचार, वाणी और कर्म में एकरूपता होती है। वे दिखावे से दूर सादा जीवन और उच्च विचार में विश्वास रखते हैं।

2. समभाव (Equanimity)
एक सच्चे संत के लिए सुख-दुख, मान-अपमान और शत्रु-मित्र सब समान होते हैं। वे विपरीत परिस्थितियों में भी अपना धैर्य और मानसिक संतुलन नहीं खोते। जैसा कि कहा गया है:
"संत हृदय नवनीत समाना" (अर्थात् संत का हृदय मक्खन की तरह कोमल और दयालु होता है।)

3. परोपकार की भावना
संत का जीवन अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के कल्याण के लिए होता है। वे समाज को सही दिशा दिखाने, अज्ञानता को दूर करने और मानवता की सेवा करने में अपना जीवन समर्पित कर देते हैं।

4. ईश्वर से सीधा जुड़ाव
संत वह है जिसे 'सत्य' का अनुभव हो चुका हो। वे कर्मकांडों के बजाय ईश्वर के साथ सच्चे प्रेम और भक्ति के संबंध को महत्व देते हैं। उनके सानिध्य में दूसरों को भी शांति और आध्यात्मिक प्रेरणा मिलती है।

5. सामाजिक सुधारक
इतिहास में कबीर, तुलसीदास, रैदास और तुकाराम जैसे संतों ने न केवल भक्ति का मार्ग दिखाया, बल्कि समाज में व्याप्त कुरीतियों, भेदभाव और पाखंड पर भी प्रहार किया।
संक्षेप में: 'संत' किसी जाति या पंख का नाम नहीं, बल्कि स्वभाव और आचरण का नाम है। जो सत्य (Truth) को जान ले और सबके प्रति दया भाव रखे, वही संत है।

देश का पहला अनोखा अभियान

गो सम्मान आह्वान अभियान

अभियान की प्रधान संरक्षक गौ माता और अध्यक्ष नंदी बाबा

आशीर्वाद भारतीय परंपरा के समस्त आराध्य देवी देवता

सेवा और सहयोग भारतीय परंपरा के समस्त आचार्य मूर्धन्य संत महापुरुष गौ संत गौ भक्त गौरक्षक गो सेवक गो पालक गो पुत्र गो वत्स एवं समस्त गो प्रेमी जन

देवदत्त दुबे

देश में पहला अनोखा अभियान शुरू हो चुका है जिसमें कोई संस्था संगठन और बैनर नहीं है केवल ईश्वर गौ माता और नंदी बाबा का सानिध्य होगा पूरे अभियान की प्रधान संरक्षक गौ माता है अध्यक्ष नंदी बाबा है और भारतीय परंपरा के समस्त आराध्य देवी देवताओं का इस अभियान को आशीर्वाद रहेगा इसके साथ ही भारतीय परंपरा के सभी मूर्धन्य संत महानुभाव सभी गौ भक्त गौ सेवक गो पालक गो पुत्र एवं गो प्रेमी इसमें सहयोग करेंगे

दरअसल देश में गौ सेवा गौ सुरक्षा और गौ सम्मान के लिए 1966 2012 2014 2016 2018 और 2023 में आंदोलन हो चुके हैं जो कि किसी न किसी संगठन के बैनर तले और किसी न किसी के नेतृत्व में होते आए हैं लेकिन यह सब आंदोलन अब तक असफल रहे हैं इसलिए इस बार इसे आंदोलन नहीं अभियान का नाम दिया गया है और संतों ने निर्णय लिया है कि इस बार कोई संस्था और कोई संगठन नहीं होगा कोई नेतृत्व कर्ता नहीं होंगे किसी संत की अगुवाई भी नहीं होगी कोई भी गौ सेवक अथवा संत महापुरुष नेतृत्व नहीं करेगा गौ माता और नंदी बाबा के अलावा किसी का ना नाम होगा और ना ही किसी का पोस्टर पर चित्र होगा

इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य केंद्र सरकार और देश की सभी राज्य सरकारों से राष्ट्र और भारतीय संस्कृति के हित में संविधान के दायरे में रहकर अहिंसक तरीके से प्रार्थना कर गौ माता सेवा अर्थात गौ माता को उचित अनुसंधान और अनुदान मिले सुरक्षा अर्थात भारत से गौ हत्या पूरी तरह समाप्त हो सम्मान गौ माता राष्ट्र माता अर्थात राष्ट्र देव राष्ट्र आराध्या राष्ट्र धरोहर राष्ट्र आधार बने का मौलिक अधिकार प्रदान करवाना यह आंदोलन क्रमबद्ध

चल रहा है दिसंबर से अप्रैल तक गहन प्रचार प्रसार जनसंपर्क कर सकल सनातन भारतीय समाज को अभियान से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है समग्र तैयारी के बाद 27 अप्रैल 2026 सोमवार को क्षेत्र के सभी गौ भक्त एवं संतों के साथ मिलकर तहसील ब्लॉक मुख्यालय जाकर तहसीलदार या एसडीएम को राष्ट्रपति प्रधानमंत्री राज्यपाल और मुख्यमंत्री के नाम गौ सेवा गौ सुरक्षा और गैस सम्मान के निमित्त प्रार्थना पत्र देंगे इसके पश्चात ढाई माह मई जून जुलाई शासन से सकारात्मक संवाद करते हुए यदि अनुकूल परिणाम आते हैं तो फिर 27 जुलाई 2026 को कलेक्टर के माध्यम से सरकार को धन्यवाद पत्र देंगे और यदि नहीं आते हैं परिणाम तो 27 जुलाई 2026 को प्रत्येक जिला केदो पर जाकर जिला कलेक्टर को फिर से ज्ञापन देंगे।

इसी तरह 10 अक्टूबर तक प्रतीक्षा करने के बाद यदि अनुकूल परिणाम नहीं आए तो फिर 27 अक्टूबर 2026 को प्रत्येक राज्य की राजधानी में जाकर राज्य शासन के सचिव के माध्यम से फिर से प्रार्थना पत्र देंगे इसके बाद फिर से 3 माह नवंबर दिसंबर जनवरी शासन से सकारात्मक संवाद करते हुए प्रतीक्षा करेंगे 3 माह प्रतीक्षा करने पर राज्य सरकार और केंद्र सरकार की ओर से 26 जनवरी 2027 तक आशा अनुकूल उत्तर या परिणाम मिल जाता है तो 27 फरवरी 2027 को सभी राज्यों के 5000 तहसील और 780 जिलों की नियुक्त किए गए संत और गौ भक्त एक महीने तैयारी करके एक करोड़ से भी अधिक गो प्रेमी लेकर दिल्ली पहुंचेंगे और सरकार को धन्यवाद प्रदान करेंगे अगर किसी कारण से गौ सेवा गौ सुरक्षा को सम्मान हेतु 26 जनवरी 2027 तक भी सरकार की ओर से सकारात्मक गो कार्य नहीं होता है तो देश के 780 जिलों 5000 तहसीलों के नियुक्त किए गए सभी को संत और गौ भक्त एक माह में तैयारी करके अधिक अधिक गो प्रेमियों को लेकर दिनांक 27 फरवरी 2027 को राष्ट्र की राजधानी दिल्ली पहुंचकर शांतिपूर्ण तरीके से संकीर्तन करते हुए गौ सेवा गो सुरक्षा को सम्मान के लिए केंद्र सरकार से नियमित पत्र लेखन के माध्यम से आह्वान करेंगे ये सभी गो भक्त साढे पांच माह अर्थात 15 अगस्त 2027 तक दिल्ली में बैठकर सरकार से नियमित गौ सेवार्थ गौ रक्षार्थ गो सममानार्थ प्रार्थना जारी रखेंगे संकीर्तन सभा में देश के प्रत्येक जिले से साथ-साथ दिन का समय लेकर अलग-अलग तिथियां पर अलग-अलग जिलों के गो प्रेमी गो संत तथा कार्यकर्ता शामिल होंगे साढ़े पांच माह कीर्तन सहित प्रार्थना और प्रतीक्षा करने पर 15 अगस्त 2027 को प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर से गौ सेवार्थ गौ रक्षार्थ और गौ समानार्थ उचित समाधान कर देते हैं तो सभी को गो भक्त सरकार को धन्यवाद देकर लौट आएंगे उपरोक्त चार चरणों तहसील जिला राज्य और केंद्र 16 माह तक शांतिपूर्ण प्रार्थना करने पर भी सरकार की ओर से अनुकूल परिणाम नहीं मिले तो 16 अगस्त 2027 से 5 - 5 गौ भक्त और संत आमरण अनशन पर बैठेंगे

अनशन में एक किसी गौ सेवक के गो हित प्राण जाने पर उसकी जगह दूसरे को प्रेमी संत भक्त आमरण अनशन पर बैठेंगे यह क्रम तब तक जारी रहेगा जब तक गौ सेवा गौ सुरक्षा गौ सम्मान नहीं मिल जाता।

गो सम्मान आह्वान अभियान

गो रक्षा अनुदान गौशाला कानून और गो चिकित्सालय अभियान के मुख्य मुद्दे

गो सम्मान आह्वान अभियान में जो प्रार्थना पत्र तहसीलदार से लेकर राष्ट्रपति को दिए जाने हैं उसमें मुख्य रूप से गौरक्षा गोगव्य का महत्व अनुदान एवं चारा संबंधित गौशाला से संबंधित कानून संबंधित गो चिकित्सालय ओर विद्यालय संबंधी 34 बिंदुओं पर मुख्य आग्रह किया गया है

दरअसल गो सम्मान आह्वान अभियान काफी सोच समझकर चलाया जा रहा है इसमें जो प्रमुख प्रार्थना है उसमें लगभग वे सभी बिंदु शामिल हैं जिससे गौ माता की रक्षा भी होगी और उनकी देखभाल होगी और उनसे जो उत्पाद है वह काफी उपयोगी साबित होंगे करीब 34 बिंदुओं में सरकार से जो मुख्य आग्रह किया गया है उसमें प्रमुख रूप से गौ माता को राष्ट्र माता गौ सेवा हेतु केंद्रीय कानून और भारतवर्ष में गो हत्या पूरी तरह समाप्त करने की प्रार्थना की गई है गोगव्य का महत्व बताया गया है जिसमें कहा गया है की गोबर गोमूत्र को लेकर के वृहद अनुसंधान केंद्र कृषि विश्वविद्यालय में बने जिससे गोबर गोमूत्र का कृषि और अन्य उपयोग में महत्व बढ़ सके गौ माता का दूध दही घी गोबर गोमूत्र को बढ़ावा मिले इससे जुड़े प्रसंस्करण यूनिट को बढ़ावा दिया जाए और नवीन अनुसंधान हो रासायनिक कृषि को नियंत्रित कर गो आधारित कृषि को बढ़ावा दिया जाए सरकारी भवनों चिकित्सालय में सामान्य पेट की जगह गोबर पेंट और फिनायल की जगह गोनाईल उपयोग अनिवार्य किया जाए आयुर्वेद चिकित्सालय में पंचगव्य औषधीयो

का निशुल्क वितरण किया जाए बड़े शॉपिंग मॉल में गो आधारित कृषि उत्पाद और देसी गौ से संबंधित डेयरी और गोबर गोमूत्र उत्पाद विक्रय हेतु एक काउंटर की अनिवार्यता लागू की जाए इसी तरह अनुदान और चार संबंधी आग्रह किया गया है जिसमें राज्यों में निराश्रित गोवंश हेतु संचालित गौशालाओं को अनुदान पर्याप्त प्राप्त हो जिससे निराश्रित गोवंश की उचित सेवा हो सके चारे की उचित कीमत तय की जाए चारे के अवैध भंडारण पर रोक लगे जिससे माफिया पर लगाम लगे घास का उपयोग केवल

गो आहार और पशु आहार के रूप में हो अन्य उपयोग ना हो चारे को फैक्ट्री में जलाने पर प्रतिबंध लगे देश भर में आरक्षित गोचर भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराने हेतु कार्रवाई हो गोचर विकास बोर्ड की स्थापना हो गोचर भूमि का उपयोग केवल गौशाला संचालक और गोचरण हेतु हो इसी तरह गौशाला संबंधित जो मुख्य आग्रह किया गया है उसमें भारत के प्रत्येक प्रांत में कम से कम एक गो अभ्यारण उपयुक्त वन भूमि या गोचर भूमि पर खोला जाए प्रत्येक ग्राम पंचायत पर निराश्रित नर गोवंश के लिए नंदी शाला की स्थापना हो गौशालाओं को मनरेगा से जोड़ा जाए ताकि गौशाला में काम करने वाले लोगों को 100 दिन का ग्वाल का वेतन मनरेगा से प्राप्त हो और एवं मनरेगा योजना के तहत गौशालाओं में निर्माण कार्य हो संपूर्ण देश में गोबर से संख्या के आधार पर गौशालाओं को एक निश्चित बिजली यूनिट निशुल्क आवंटित हो अथवा बिजली बिल में एक निश्चित प्रतिशत छूट मिले अधिक दान प्राप्त करने वाले सरकारी नियंत्रण में चल रहे मंदिरों के साथ गौशाला संचालन अनिवार्य किया जाए महानगरों में बड़े आवासीय क्षेत्र में गौशाला स्थापित करने हेतु बिल्डर को पृथक स्थान छोड़ने के निर्देश जारी किए जाएं ताकि वहां रहने वाले को प्रेमियों को गौ दर्शन और ग्रास का लाभ प्राप्त हो एवं निराश्रित गोवंश को आश्रय प्राप्त हो सके गोवंश की मृत देह का उचित अंतिम संस्कार हो सके ऐसा स्थान सरकार उपलब्ध कराये एवं अंतिम संस्कार की उचित व्यवस्था हो ताकि गौ माता की मृत देह का अपमान ना हो प्रार्थना पत्र में कानूनी संबंधी आग्रह भी किया गया है जिसमें कहा गया है कि गौ हत्यारे गो तस्करी में लिप्त अपराधियों के लिए आजीवन कठोर कारावास जैसी सजा का प्रावधान हो गो तस्करी में उपयोग आने वाले वाहनों की जपती होने पर जमानत न हो वह सदा सदा के लिए राजसात हो और उन्हें नीलाम किया जाए अथवा गौशालाओं को उपयोग हेतु सौंप दिया जाए

कंपनियों के सीएसआर फंड में से एक निश्चित राशि गौ सेवा से जुड़े कार्य हेतु खर्च करने की अनिवार्यता लागू हो सिंगल उसे पॉलीथिन कैरी बैग के उपयोग पर शक्तिपूर्वक प्रतिबंध लगाया जाए अथवा उसके उपयोग के पश्चात विधिवत निस्तारण किया जावे पशु मेलो के नाम पर हो रही अवैध गो तस्करी पर अंकुश लगाने हेतु केंद्रीय कानून बने इसी तरह प्रार्थना पत्र में गो चिकित्सालय एवं विद्यालय से संबंधित आग्रह किया गया है जिसमें मुख्य रूप से जिला स्तर पर पृथक से पंचगव्य चिकित्सालय की स्थापना हो विद्यार्थियों को दिए जाने वाले मिड डे मील में देसी गाय माता के ताजा दूध अथवा देसी गाय माता के दूध के पाउडर को शामिल किया जाए संस्कृत विद्यालयों में गौ सेवा प्रकल्प अनिवार्य किए जाएं सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों और महाविद्यालयों में देसी गाय के आर्थिक वैज्ञानिक और धार्मिक महत्व की विषय को अनिवार्य किया जाए राजमार्गों पर होने वाली गो दुघटनाओं पर नियंत्रण के उपाय किए जाएं प्रत्येक 50 किलोमीटर अथवा प्रत्येक टोल प्लाजा पर घायल गोवंश को तत्काल उपचार मुहैया कराने हेतु गो वाहिनी एंबुलेंस और गो चिकित्सा कर्मी नियुक्त हो तथा प्रत्येक 150 से 200 किलोमीटर पर गो चिकित्सालय की व्यवस्था हो।

कुल मिलाकर गो सम्मान आह्वान अभियान में जितने भी बिंदु मुख्य आग्रह में शामिल किए गए हैं यदि सरकार गंभीरता पूर्वक विचार करके निर्णय ले लेती है तो फिर चौतरफा समाज और देश को फायदा हो सकता है आर्थिक और धार्मिक के साथ-साथ वैज्ञानिक महत्व भी बढ़ेगा और संत समाज एवं गौ भक्तों की वर्षों पुरानी मांग भी पूरी हो जाएगी इस बार जिस तरह से आंदोलन को अभियान नाम दिया गया है शोरगुल की जगह संकीर्तन का रास्ता अपनाया गया है धैर्य और संयम की पराकाष्ठा तक जाने की तैयारी है सो इस बार की लड़ाई निर्णायक साबित होगी

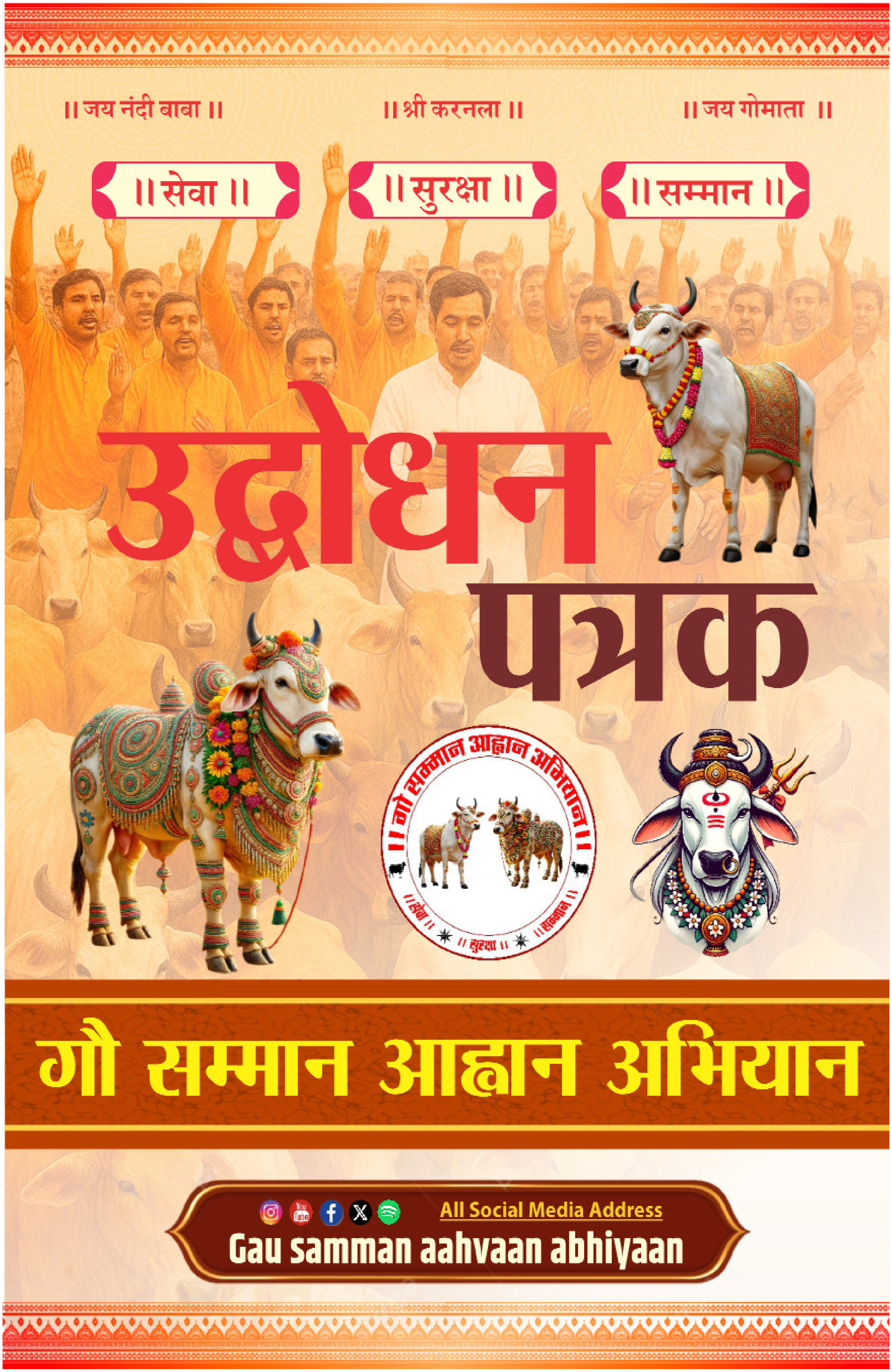

	जय नंदी बाबा	
	श्री करनला	
	जय गोमाता	
	सेवा	
	सुरक्षा	
	सम्मान	
उद्बोधन
पत्रक
गौ सम्मान आह्वान अभियान
All Social Media Address
Gau samman aahvaan abhiyaan

आइये.....आज हम गौमाता पर चर्चा करते हैं।

यदि हम विविध स्रोतों से प्राप्त समाचारों पर सावधानीपूर्वक विचार करे, तो विषय सामने आता है कि भारत में प्राकृतिक रूप से प्रतिदिन गोलोक पधारने के अलावा लगभग 80,000 गोवंश प्रतिदिन अकाल मृत्यु से संसार छोड़ रहा है, जिनमें कुछ गौवंश पॉलीथिन खाकर के, कुछ भुख से, कुछ दुर्घटना से और शेष कसाई की छूरी से प्रतिदिन भारत में प्राण त्याग देता है। अनेकों गोवंश सड़कों पर निराश्रित विचरण कर रहे है। वर्तमान समय में गौमाता की न तो उचित सेवा हो पा रही है, न पूर्ण सुरक्षा हो रही हैं और ना ही उचित सम्मान प्राप्त हो रहा हैं। गाय की बात करने वाले को तो आजकल तो लोग प्रपंची मानकर उपहास करते दिखाई देते है।

भारत में आजादी के आठ दशक (अठत्तर वर्ष) व्यतीत हो जाने के बाद भी ना तो भगवती गौमाता की उचित सेवा हो पा रही है, ना सुरक्षा है, ना सम्मान है।

सत्य तो यह है कि जिन 10/12 राज्यों में गोरक्षा के कानून बने हुए है, गोशालाओं को शासकीय, सामाजिक और आर्थिक सहायता मिलती है, अनुदान मिलता है, वहाँ पर भी गोमाता पूर्णरूप से सुरक्षित और सुखी नहीं है। तस्करी के माध्यम से अन्य प्रदेशों में ले जाकर वध कर दिया जाता है। अनेकों गोवंश निराश्रित अवस्था में विचरण करता दिखाई देता है, तो जिन राज्यों में गोरक्षा के लिये कोई कानून नहीं है, ना गोशालाओं को कोई आर्थिक सहायता सरकार प्रदान करती हैं, किसी भी प्रकार का अनुदान गोशालाओं को नहीं दिया जाता है, वहाँ की गोमाता कैसे सुरक्षित और सेवित हो सकती है?

आजादी के 78 वर्ष बीत जाने के बाद भी अनेकों राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में निर्बाध गोवध हो रहा है, गो अपमानित हो रही है, निराश्रित विचरण कर रही है, असंख्य गोवंश अत्यधिक दु:खी है।

इन स्थितियों को देखते हुए देश के कुछ गो प्रेमी विचारवान संतों और गो सेवकों ने भगवान श्री कृष्ण जी की पावन लीला स्थली ब्रजभूमि में बैठ कर विचार किया कि अगर हम लोग अपने जीवनकाल में गायमाता की सेवा, सुरक्षा और सम्मान के लिए कोई सार्थक प्रयास नहीं करते हैं, तो हमें इतिहास माफ नहीं करेगा। गो रक्षा को लेकर हर युग में प्रयास हुआ है, तो इस 21वीं सदी में भी कुछ तो प्रयास होना ही चाहिए। ऐसी कोई सदी नहीं निकली, जिसमें गौमाता की सुरक्षा के लिए प्रयास नहीं किया हो..... कितने सफल हुए, कितने असफल हुए... यह बात अलग है, लेकिन प्रयास प्रत्येक सदी में हुए, तो 21वीं सदी में भी गोरक्षा-गोसेवा को लेकर ईमानदारी से कोई प्रयास तो होना ही चाहिए। संतों और गोभक्तों ने मिलकर के विचार किया कि कुछ तो करना ही चाहिए। बहुत मंथन करने के बाद सभी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मुट्ठीभर लोग अपने सामान्य प्रयासों से कुछ भी नहीं कर पाएंगे। थोड़े से लोग लाख कोशिश करके भी, करोड़ों प्रयास करके भी गायमाता की सुरक्षा नहीं कर पाएंगे। भाईयों और बहनों! वास्तव में नहीं कर पाएंगे क्योंकि वर्तमान समय में गोभक्तों की संख्या बहुत कम है। गोसेवक समाज लाख प्रयास करें, लेकिन यह संभव नहीं है की वह भारत के सभी गोवंश की संपूर्ण सेवा, सुरक्षा और सम्मान प्रदान कर सके। लेकिन हां! जो सेवा, सुरक्षा का कार्य हम लोग अत्यधिक परिश्रम और प्रयास करके भी नहीं कर सकते है, वह कार्य सरकार की एक कलम कर सकती है, जो कार्य हजार हाथ नहीं कर सकते हैं, वह कार्य सरकार के एक आदेश से हो सकता है। वर्तमान समय में गौमाता की सेवा सुरक्षा और सम्मान को अगर कोई सुनिश्चित कर सकता है, तो व है सिर्फ भारत सरकार...

भारत सरकार के अतिरिक्त और कोई यह कार्य नहीं कर सकता।

तो क्या किया जाए..... सरकार को इस कार्य के लिये कैसे राजी किया जाए? कई बिंदुओं पर विचार करने के बाद निष्कर्ष यह निकला कि सरकार को मनाने के दो ही तरीके हैं

एक सरकार के विरुद्ध आंदोलन.. और

दूसरा है सरकार से प्रार्थना...

आंदोलन की बात करें... तो आंदोलन इस समय सफल नहीं हो सकता है, क्योंकि गौमाता के लिए आंदोलन अधिकार का नहीं कर्तव्य का विषय है। आंदोलन अगर अधिकारों का हो, तो लोगों की भीड़ उमड़ जाती है, लेकिन जहाँ पर कर्तव्य की बात आती है, वहां से लोग पीछे हट जाते हैं, कोई भी कर्तव्य पालन करना नहीं चाहते हैं।इसलिए अगर हम आंदोलन की बात करें, तो मुट्ठीभर लोग इकट्ठा होंगे, जिससे सरकार को कोई फर्क नहीं पड़ता है।वैसे भी स्वतंत्र भारत में 1966 से लेकर अब तक गोरक्षा को लेकर कई आंदोलन हुए, परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई। अतः आंदोलन का विचार करना ही पागलपन है, करना ही नहीं चाहिए, तो फिर क्या करें?

अगर आंदोलन का विचार त्याग देते हैं, तो फिर एक ही रास्ता बचता है और वह है प्रार्थना... सभी गोभक्त हाथ जोड़कर सरकार से प्रार्थना करें।

कौन सी सरकार ?

एक ऊपर वाली सरकार और एक नीचे वाली सरकार....

दोनों सरकार से यदि सभी गो सेवक समानांतर प्रार्थना करें, तो निश्चित सफलता मिलेगी, क्योंकि महापुरुष कहते हैं की प्रार्थना में बहुत शक्ति होती हैं।निष्कामभाव से अथवा परमार्थ भाव से की गई प्रार्थना का सुफल अवश्य प्राप्त होता है।

इस विषय पर सभी गो प्रेमी, राष्ट्रप्रेमी संतो और सद्गृहस्थों ने विचार किया कि प्रार्थना का स्वरूप क्या होगा..कैसा होगा..कितने लोग और कितनी अवधि तक प्रार्थना करेंगे?

केवल 5-50 गो प्रेमी भाई बहन जाके एक-दो बार प्रार्थना करें, तो बात बन नहीं पाएगी, लोकतंत्र में कम लोगो के द्वारा अल्प समय के लिए की गई प्रार्थना से बात नहीं बन सकती।

अतः विचार किया गया कि सामूहिक रूप से सभी भारतवासी भारत सरकार से गौसेवा, गोरक्षा और गो सम्मान हेतु प्रार्थना करें, देश के हर कोने-कोने से प्रार्थना हो, लंबी अवधि तक प्रार्थना हो, तब ही बात बन सकती है।

"इन सभी बातों पर बृज निवास के समय सभी गोसेवकों और गोप्रेमी संतों ने मिलकर निश्चय किया कि भारत में लगभग 5000 तहसील है, प्रत्येक तहसील क्षेत्र से 2000/3000 लोग तहसील मुख्यालय जाकर प्रधानमंत्री जी, राष्ट्रपति महोदया, राज्य के राज्यपाल महोदय और मुख्यमंत्री जीके नाम तहसीलदार/SDM/ब्लॉक अधिकारीको आदरपूर्वक लिखा हुआ प्रार्थना पत्र प्रदान करें, जिसका भाव कुछ इस प्रकार हो कि 'भारत में बहुत बड़ी संख्या में सनातनी/भारतीय विचारधारा के लोग रहते हैं और सब के सब गोवंश के प्रति आदर भाव रखते है और गो को अपनी माता मानते हैं, गोवंश हमारी आस्था का केंद्र है, हमारी भारतीय संस्कृति का मूल पोषक तत्व है, गोवंश विषमुक्त कृषि का मूल आधार है, भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है, गोमाता भारत के आरोग्य की मूल कुंजी है, गोहत्या केवल मात्र किसी प्राणी की हत्या नहीं, बल्कि हमारी आस्था की हत्या है। गो हत्या भारत के स्वास्थ्य, समृद्धि और संस्कृति की हत्या है। सत्य तो यह है कि गो हत्या राष्ट्र हत्या है, भारत हत्या है। भारत को ब्रिटिश दासता से स्वतंत्र हुए आठ दशक पूर्ण होने आए है और अभी तक भारत में गोवंश अत्यंत दुःखी है, असुरक्षित है। अब तो सम्पूर्ण भारत वर्ष में कानूनी रूप से गो हत्या पूर्णतः समाप्त होनी ही चाहिए। गो रक्षा की माँग किसी जाति, समाज अथवा वर्ग विशेष के निजी हितों की माँग नहीं है, अपितु सम्पूर्ण मानव जाति और जीव जगत के हित की माँग है, राष्ट्र और विश्व कल्याण की माँग है।"

इस प्रकार के प्रार्थना पत्र वैज्ञानिकों, विधि विशेषज्ञयो और विद्वानों के समूह द्वारा सामूहिक विचार कर उचित और विनयपूर्वक भाषा में लिखकर देश की 5000 तहसीलों (तालुका, ब्लाक, प्रखंड) से एक साथ प्रत्येक राज्य के राज्यपाल महोदय, मुख्यमंत्री जी, माननीया राष्ट्रपति महोदया औ भारत के प्रधानमंत्री जीको एक ही दिन, एक ही समय 5000 तहसीलदारों के माध्यम से, फैक्स, मेल और स्पीड पोस्ट के माध्यम से भेजा जाये। सभी 5000 तहसीलों से प्राप्त रिसीविंग कॉपी संग्रहित कर सत्यापित छाया प्रति की चार फ़ाइल बनाकर (हार्ड कॉपी) के रूप में सीधी प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री और राज्यपाल कार्यालय को सौंपी जाये।इस प्रकार से किसी भी राज्य अथवा केंद्र सरकार के विरुद्ध आंदोलन नहीं करते हुए आक्रोश नहीं दर्शाते हुए, सिर्फ विनयपूर्वक प्रार्थना की जाए, तो निश्चित गो सेवा, गो रक्षा और गो सम्मान की बात बन जाएगी। अब प्रश्न ये है कि 5000 तहसीलों के पचास लाख गोभक्तों, गोसेवकों, गोप्रेमीयों, गोरक्षकों को कैसे तैयार करें?

तो उसके लिए वास्तविक गो प्रेमी संतों ने आह्वान किया है कि भारत में लगभग 780 जिले हैं, यदि 108 गो सेवी संत और गोभक्त 2 वर्ष तक पूर्णकालिक निष्काम सेवा हेतु तैयार हो और 108 प्रचारकों में से प्रत्येक गो संत, गो भक्त 8-10 जिलों में गो सम्मान आह्वान अभियान के प्रचार प्रसार हेतु जिला और तहसील में काम करने वाले गो सेवक संतों और गो भक्तों को तैयार कर उन्हें कार्य योजना समझाकर कार्य में लगावे और स्वयं उस क्षेत्र पर अभियान विषयक निरक्षक की जिम्मेदारी ले ले और आठ-दस जिलों में घूम-घूम कर जिला स्तरीय सेवकों के साथ मिलकर उन जिलों की प्रत्येक तहसील तक जाकर समाज सेवी और धर्म प्रेमी भाई बहनों से हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि 'भाईयों बहनों! भारतवर्ष में आजादी के 79वां वर्ष चल रहा है, सवा अरब सनातनी राष्ट्र प्रेमी भाई बहनों के रहते हुए भी भारत मे गोवंश अत्यंत दुःखी है, भूख से, दुर्घटना से, पॉलीथिन से, परिवहन से और गो हत्यारों की छुरी से प्रतिदिन 80,000 से अधिक गोवंश अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।आप से अनुरोध है कि गौमाता के, गोवंश के सुख के लिए एक दिन के लिये एक-दो घंटे का समय निकालकर 27 अप्रैल 2026 को सुबह 11बजे अपने ब्लॉक/तहसील/मंडल/सब डिविजन/ उप जिला/अनुमंडल कार्यालय पहुँचकर वहाँ उपस्थित अन्य गो प्रेमी, राष्ट्र प्रेमी भाई बहनों के साथ मिलकर वहाँ के सक्षम अधिकारी को माननीया राष्ट्रपति महोदया, प्रधानमंत्री जी, माननीय राज्यपाल महोदय, मुख्यमंत्री जी के नाम गो सेवा, गो रक्षा, गो सम्मान हेतु बिना किसी हंगामे के बिना किसी नारेबाजी के शांतिपूर्ण तरीक़े से सामूहिक रूप से हस्ताक्षरित प्रार्थना पत्र सौंप देवे।

इस प्रकार सभी 108 गो सेवक/गो संत 780 जिला स्तरीय गो सेवक, 5000 तहसील स्तरीय गो सेवक मिलकर प्रयास करके 5/6 माह में प्रत्येक तहसील से औसत 1-1 हज़ार गो सेवकों को प्रत्येक तहसील/ब्लॉक/मंडल/सब डिविजन/उप जिला/ अनुमंडल पर गो सेवा, गो रक्षा, गो सम्मान हेतु प्रार्थना पत्र देने के लिए तैयार करें। इस प्रकार से पूरे देश में प्रार्थना पत्र देने वाले गो सेवकों गो संतों की संख्या लगभग 50 लाख हो जाएगी। 27 अप्रैल 2026 को, जिस दिन कोई सरकारी छुट्टी (राजकीय अवकाश) भी नहीं है, कोई त्यौहार भी नहीं है और कोई विवाह लग्न भी नहीं है, उस दिन सभी गो सेवक, गो संत मिलकर अपने-अपने तहसील मुख्यालय जाकर लिखित प्रार्थना पत्र तहसीलदार/ब्लॉक अधिकारी को आगे माननीया राष्ट्रपति महोदया, प्रधानमंत्री जी, राज्य के माननीय राज्यपाल महोदय और मुख्यमंत्री जी को प्रेषित करने हेतु प्रदान करें।

प्रमाणित रिसीविंग प्रतिलिपि लेकर उसकी छाया प्रति रजिस्टर्ड डाक से उक्त चारों महानुभावों को भेजे साथ ही साथ उनके सचिव महोदय को फ़ेक्स और मेल भी सभी 5000 तहसीलों के माध्यम से भेजे सभी 5000 तहसीलों से चार-चार प्रति संग्रहित कर सत्यापित प्रतिलिपि व्यक्तिगत रूप से माननीया राष्ट्रपति महोदया, प्रधानमंत्री जी, राज्य के माननीय राज्यपाल महोदय और मुख्यमंत्री जी, इन चारों के कार्यालय जाकर सभी प्रतिलिपियां इनको व्यक्तिगत अथवा इनके मुख्य/निजी सचिव को सौंप दी जाये। इस प्रकार 5000 तहसीलों से 50/60 लाख गोभक्तों के द्वारा एक ही तिथि 27 अप्रैल 2026 को दोपहर 11 से 12 बजे के बीच एक साथ गो सेवा, गो रक्षा और गो सम्मान की शांतिपूर्ण मांग उठेगी, तो सरकार निश्चित इस कार्य को करने का मन बना ही लेगी। सरकार विचार करेगी कि देश का कोना-कोना जाग गया है और गो रक्षा की शांतिपूर्ण माँग कर रहा हैं, तो अब हमें यह कार्य करना ही है।

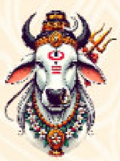

3 महीने तक प्रार्थना पत्र के रचयिता समूह (वैज्ञानिक, विधि विशेषज्ञ और विद्वान) सरकार से संवाद बनाये रखते हुए सरकार के संशयों को दूरकर समाधानपरक युक्ति बताए और प्रार्थना जारी रखें।

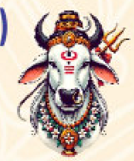

अगर सरकार द्वारा 3 महीने में गो सेवा, गो रक्षा और गो सम्मान विषय पर गंभीरता नहीं दिखाई जाए, गोहित, मानवहित, प्राणीहित, राष्ट्रहित और विश्वहित परक बात नहीं सुनी जाए, तो पुनः जिला और तहसील स्तरीय गो सम्मान आह्वान अभियान के कार्यकर्ताओं संतों और गो सेवकों का सहयोग लेते हुए देश के करीब 780 जिला केन्द्रों पर 5-5 हज़ार गो सेवकों को साथ लेकर, जिला कलेक्टर के पास जाकर के सभी तहसीलों के गो प्रेमी कार्यकर्ता, गो प्रेमी संत, मिलकर जिला कलेक्टर के माध्यम से पुनः सरकार को (माननीया राष्ट्रपति महोदया, प्रधानमंत्री जी, राज्य के माननीय राज्यपाल महोदय और मुख्यमंत्री जी को) याद दिलाए कि हम सब ने आपको तीन महीने पहले 5000 तहसीलों के माध्यम से गो सेवा, गो रक्षा और गो सम्मान हेतु प्रार्थना की थी, लेकिन शायद आपको इस विषय पर विचार करने का समय नहीं मिला अथवा आप विस्मृत हो गए।अतः हम दोबारा 780 जिला केन्द्रों के जिला कलेक्टर के माध्यम से आपसे प्रार्थना करते हैं कि हम सभी राष्ट्र प्रेमी, गो प्रेमी सात्विक और निष्काम भाव वाले देशवासियों की बात सुनी जाए और गो हत्या पर सदा-सदा के लिए आपके राज्य/संपूर्ण भारतवर्ष में प्रतिबंध लगाया जाये। गायमाता को राष्ट्रमाता के पद पर विराजित किया जाए, गौ माता की सेवा और सुरक्षा लिए संपूर्ण देश में (कश्मीर से कन्याकुमारी और कोहिमा से कांडला तक) एक समान केंद्रीय गो रक्षा, गो सेवा का कानून बने। तीन महीने का समय पुनः वैज्ञानिको, विधि विशेषज्ञों और विद्वानों के साथ बैठकर समाधान निकालने के दिया जाए और शेष गो भक्त गो संत संकीर्तन करते हुए प्रार्थना करें और आगे की कार्य योजना पर कार्य करते रहें।

इस प्रकार 3 महीने तक प्रार्थना पत्र के रचयिता समूह (वैज्ञानिक, विधि विशेषज्ञ और विद्वान) सरकार से संवाद बनाये रखते हुए सरकार के संशयों को दूर कर समाधान परक युक्ति बताए और सरकार से गो रक्षा, गो सेवा, गो सम्मान हेतु कानून बनाने की प्रार्थना जारी रखें।

"3 महीने तक शांतिपूर्ण, पूर्णतया सात्विक, अहिंसक तरीके से प्रार्थना और प्रतीक्षा करने पर भी सुनवाई ना हो, गो रक्षा, गो सेवा, गो सम्मान हेतु कानून बनाने में सरकार की रुचि दिखाई नहीं दें, तो फिर राज्य के सभी जिलों और तहसीलों के समस्त गो प्रेमी संतों, गोसेवी कार्यकर्ताओ, गो रक्षकों और गो भक्तों को लेकर अपनी-अपनी स्टेट कैपिटल (राज्य राजधानी) पहुंचे और राज्य स्तरीय सचिवालय के माध्यम से उपरोक्त चारों सक्षम महानुभावों से प्रार्थना करें, कि हम पिछले 120 दिनों से आपसे सविनय प्रार्थना कर रहे हैं, साथ ही शांति सहित, धैर्यपूर्वक आप द्वारा होने वाले सकारात्मक निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सभी यही चाह रहे हैं कि हमारी गो सुख विषयक बात सुनी जाए, राज्य/भारत वर्ष के संपूर्ण गौवंश को न्याय प्रदान किया जाए, परन्तु अब तक बात बनी नहीं है, भारतीय गोवंश हित कोई पूर्ण सकारात्मक निर्णय हुआ नहीं है, अब हम राज्य की राजधानी तक आ गए हैं। अब आप भारत के बहुसंख्यक राष्ट्र प्रेमी, गोवंश प्रेमी समाज की बात सुन लीजिए और आगामी गणतंत्र दिवस (26 जनवरी 2027) को राज्य स्तरीय आयोजन में तय स्थान से माननीय राज्यपाल महोदय और केंद्रीय आयोजन में लाल क़िले की प्राचीर से गो रक्षापरक एक सुंदर सकारात्मक घोषणा राष्ट्र, संस्कृति और परंपरा हित करवा दीजिए कि अब देश की आजादी को 79 वर्ष बीत चुके हैं। स्वतंत्र भारत में लंबे समय से सनातन राष्ट्र प्रेमी समाज प्रतीक्षा कर रहा है कि राज्य/संपूर्ण भारत में गौ हत्या समाप्त हो, उसके लिए हम स्पष्ट घोषणा करते हैं कि अब राज्य/भारत में गो हत्या नहीं होगी, गो हत्या करने वाले को फांसी के फंदे पर लटका दिया जाएगा और सम्पूर्ण गोवंश की सेवा हेतु चारा, गोबर, गोचर, गो दुग्ध, गो आधारित कृषि विषयक नीतियाँ बनाकर शीघ्र कार्य प्रारम्भ कर दिया जाएगा। ऐसा होने पर सारा राज्य/देश सदा आपका ऋणी रहेगा और युगों-युंगो तक आपको याद किया जायेगा, ऐसी प्रार्थना प्रार्थनापत्र के माध्यम से सचिवालय में देकर आए।"

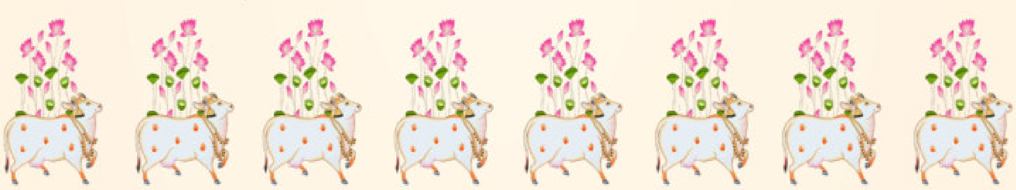

सभी गो प्रेमी जन 3 महीने तक संकीर्तन करते हुए प्रतीक्षा करें।

3 महीने तक प्रार्थना पत्र के रचयिता समूह (वैज्ञानिक, विधि विशेषज्ञ और विद्वान) सरकार से संवाद बनाये रखते हुए सरकार के अधिकारियों, मंत्रियों के मन में गहराई से प्रवेश कर चुके संशयों को दूर कर समाधानपरक युक्ति सुझाए और गोवंश हित विषयक प्रार्थना जारी रखें। इतना करने पर भी सरकार गो सेवा, गो रक्षा, गो सम्मान के विषय पर गंभीरता नहीं दिखाए और 26 जनवरी 2027 तक भी गो हित में उचित निर्णय नहीं ले, तो फिर 5908 कार्यकर्ताओं सहित देश के सभी गोसेवक मिलकर एक महीने में राष्ट्र की राजधानी दिल्ली जाने की पूरी तैयारी करे और सरकार को स्पष्ट करें, कि शायद आप दूर से हमारी बात सुन नहीं पा रहे हैं, इसलिए अब हम आपके पास दिल्ली आकर ही अपने मन की गो विषयक पीड़ा कहेंगे।

एक माह में पूरी तैयारी करके भारत के 780 जिलों में से अलग-अलग राज्यों के 30 जिलों से 1/1 हज़ार कार्यकर्ता प्रत्येक जिले से इकट्ठा होकर 7 दिन के लिए दिल्ली पहुंचेगे और सात दिन दिल्ली में गो सम्मान आह्वान अभियान हेतु तय प्रार्थना स्थल पर बैठेंगे। फिर 7 दिन बाद अन्य 30 ज़िलों से 30 हज़ार गो प्रेमी पहुँच जाएँगे और सात दिन पहले आए गो प्रेमी निकल जाएँगे। इस प्रकार अलग अलग जिलों से 7-7 दिन का समय निकालकर 30-30 जिले के लोग वहाँ पर बैठेंगे। ऐसी स्थिति में भारत में 780 जिले है, तो अपने देश भारत की राजधानी दिल्ली में साढ़े छः महीने तक लगातार 30 हज़ार गो प्रेमी बैठे रहेंगे। एक गो प्रेमी को दिन कितने देने है?

.....सिर्फ 7 और इधर 6:30 महीने तक लगातार ऐसी स्थिति (तीस हज़ार लोग बैठे रहेंगे) बनी रहेगी।

अब अगला प्रश्न की वहाँ बैठकर तीस हज़ार गोभक्त करेंगे क्या?

सिर्फ दो काम करने है...

एक संकीर्तन द्वारा भगवान से प्रार्थना और

दूसरा कागज कलम द्वारा सरकार को चिट्ठीयाँ लिखकर प्रार्थना।

चिट्ठी में गो सुख विषयक माँग लिखनी है कि गाय हमारी मां है, हमारी परंपरा, हमारी कृषि, हमारी संस्कृति, हमारे अर्थ, हमारे आरोग्य, हमारे विषमुक्त सात्विक पोषण, हमारे अध्यात्म और हमारे जीवन का मूल आधार है। गोवंश के अतिरिक्त हमारे पास इन सब की प्राप्ति का और कोई सहज सुलभ साधन भी नहीं है। इस दृष्टि से गो सेवा, गो सुरक्षा, गो सम्मान हम बहुसंख्यक राष्ट्र प्रेमीयों का मौलिक अधिकार भी है। गो मांस भक्षियों के पास, न्यूट्रिशन और जीभ के स्वाद हेतु अन्य प्राकृतिक, अप्राकृतिक अन्य बहुत विकल्प है, इसलिए कृपा करके अति शीघ्र गोवंश सेवा, रक्षा और सम्मान का कानून बनाये। एक गो सेवक की लेखन क्षमता कितनी भी धीमी गति की हो (स्लो स्पीड हैंड राइटिंग कपैसिटी हो) फिर भी वह 24 घंटे (एक दिन) में 10 चिट्ठी तो सरकार को लिख ही सकता है। 30,000 लोग 10/10 चिट्ठियां लिखे तो, एक दिन में 3 लाख चिट्ठियां लिखी जाएगी। 6:30 महीने तक प्रतिदिन 3 लाख चिट्ठियां प्रधानमंत्री कार्यालय पहुंचाई जाएगी।

इतनी चिट्ठियाँ प्रधानमंत्री कार्यालय पहुंचेगी... क्या तब भी सरकार नहीं सुनेगी?
ऐसा विश्वास है कि सरकार निश्चित ही सुनेगी और गो हत्या पर प्रतिबंध लग जाएगा।

गो सेवा, सुरक्षा को लेकर केंद्रीय नीति बन जाएगी,
गो माता को राष्ट्र माता का सम्मान मिल जायेगा,
गो सेवा का कार्य सुचारू रूप से प्रारम्भ हो जाएगा,
सम्पूर्ण भारत का गोचर कब्जे से मुक्त हो जाएगा,
गोचर का उपयोग सिर्फ गोवंश के लिए होगा,
चारा माफिया पर लगाम लगेगी,
गो आधारित कृषि को बढ़ावा मिलेगा,
गो उत्पादों का उपयोग बढ़ेगा,
पंचगव्य औषधीयों से उपचार को बल मिलेगा, जिससे पूरे विश्व का मंगल होगा।

एक प्रतिशत यह मान लें कि इतना सात्विक और शांतिपूर्ण तरीके से सतत् प्रयास करने पर भी 1 अगस्त 2027 तक सरकार इन गो सुख विषय कार्यों पर गंभीर नहीं हो और गो सुख विषय काम नहीं होता है, तो एक थोड़ा विशेष आत्मिक, आधिकारिक भाषा में पत्र लिखा जाएगा की 15 /16 महीनों से हमने सतत् और शांतिपूर्ण तरीके से, अहिंसक तरीके से, राष्ट्र की निजी अथवा सार्वजनिक किसी भी प्रकार की किसी भी संपत्ति की एक सूई को भी नुकसान न पहुंचाकर, किसी को अभद्र भाषा ना बोलते हुए, किसी पर भी कोई विवादित टिप्पणी किए बिना, चुपचाप भगवान का भजन करते हुए आपसे गोसुख विषय प्रार्थना करते रहे, लेकिन 15 महीने निकल जाने के बाद भी आपने पता नहीं क्यों.... हमारी प्रार्थना को गंभीरता से नहीं लिया, कोई सुनवाई नहीं की।

अतः अब हम आपको सीधा–सीधा विनयपूर्वक 13 दिन का समय देते हैं, 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस आ रहा है।

15 अगस्त के दिन लाल किले की प्राचीर से अगर प्रधानमंत्री महोदय गौहत्या पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने की घोषणा करते है और हमारे द्वारा की गईं गोरक्षा,गोसेवा और गो सम्मान विषयक प्रार्थना पर सकारात्मक रूख अपनाते है, तो हम अवतार की तरह प्रधानमंत्री जी की पूजा करेंगे और 15 अगस्त को उपरोक्त कार्य करने का स्पष्ट निर्णय प्रधान मंत्री जी के द्वारा दिए उद्बोधन में नहीं आता है तो, हम समझ लेंगे कि भारत में अब गो हत्या बंद नहीं हो सकती हैं, गो सेवा और गो सम्मान विषयक कार्य नहीं होने वाला हैं और यह परम सत्य है कि गोवंश हमारे प्राण है, अगर हमारे प्राणों की ही नित्य हत्या होती रहे, तो फिर हम देह से जिंदा रह कर क्या करेंगे? इसलिए अगर 15 अगस्त 2027 तक भारत में गोहत्या बंद नहीं होती है और गो सेवा, गो सम्मान विषयक कार्य नहीं होता है, तो 16 अगस्त के दिन से हम लोग अन्न और अन्य आहार का त्यागकर (अनशन द्वारा) अपने प्राण त्याग देंगे और इसके लिए धर्म और संविधान दोनों की और से स्वीकृति भी है। अनशन करने से सरकार हमें रोक भी नहीं सकती है, यह हमारी तरफ़ से किया गया अंतिम उपाय है।

अब प्रश्न यह खड़ा होता है कि अनशन कौन करेगा?

तो अनेकों गो भक्तों और गो प्रेमी संतों ने अनशन का संकल्प ले लिया है। यह स्पष्ट स्वीकृति दे दी है कि जब भी अनशन की आवश्यकता पड़े, तो हमें याद किया जाए। हमें हमारे प्राणों की आहूति देनी पड़े, तो भी हम प्राणान्त तक अनशन हेतु तैयार हैं। कुछ के प्राण जाएँगे, जाएँगे, तब अन्य गो भक्त उनके स्थान पर अनशन हेतु बैठ जाएँगे। इस प्रकार अनेकों गो संत,गो सेवक आगे आते चले जायेंगे ओर यह अनशन का क्रम तब तक चलता रहेगा, जब तक भारत में गाय माता को सेवा सुरक्षा और सम्मान युक्त न्याय नहीं मिल जाता

इस संपूर्ण अभियान में हमारी किसी से भी कोई व्यक्तिगत लड़ाई नहीं है, किसी का कोई विरोध नहीं है, गाय हमारी माता है और जब हमारी बात नहीं सुनी जाए, तो हम हमारे प्राण तो दे ही सकते हैं। हम किसी का कोई विरोध नहीं करेंगे, किसी को अपशब्द नहीं बोलेंगे, रेल की पटरीयाँ नहीं उखाड़ेंगे, थाने चौकीयाँ नहीं जलाएंगे, लेकिन हम प्रार्थना करेंगे और हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं होने पर अनशन द्वारा अपने प्राण त्याग देंगे।

और हमें विश्वास है कि प्राण देने की स्थिति आए, उसके पहले सरकार भी विचार करेगी ही करेगी।और इसके पीछे दो कारण हैं क्योंकि आगे चुनाव भी नजदीक आ रहा है तो सरकार को यह विचार करना पड़ेगा की 15 माह से भारत भर के गो प्रेमी भाई बहन गोहित हमसे प्रार्थना कर रहे है, 6 महीने से ये गो प्रेमी संत एवं भक्त दिल्ली में लगातार बैठे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं और अब अनशन की भी तैयारी चल रही है, अब यदि इनकी नहीं सुनी गई और गोवंश को सेवा, सुरक्षा और सम्मान का मौलिक अधिकार नहीं दिया गया, तो इसके परिणाम आगे सरकार के हित में नहीं होंगे।

यूँ भी सरकार को चुनाव के लिए कोई ना कोई उचित मुद्दा सनातनी समाज को जोड़े रखने हेतु चाहिए।

इस समय भारतवर्ष में प्रमुख मुद्दों की बात करें तो केवल दो ही मुद्दे शेष बचे हैं....

एक तो है हिंदू राष्ट्र और दूसरा गौ हत्या पर प्रतिबंध

और यदि पहले हिंदू राष्ट्र बनाने की बात पर विचार किया जाए, तो बात बिना पति के सुहागिन जैसी हो जाएगी कि

एक लड़की है... गले में मंगलसूत्र है, मांग में सिंदूर है, लाल ओढ़नी भी ओढी है, सुहाग का चूड़ा भी पहन रखा है, लेकिन उसका कोई पति नहीं है, तो फिर बिना पति की वह सुहागिन कैसी है?यदि गौहत्या भारत में बंद नहीं होती हैं और कोई कहे भारत हिंदू राष्ट्र हैं, तो यह मजाक से ज्यादा कुछ भी नहीं, क्योंकि सनातन का प्राण तो गोमाता ही हैं और जब गाय कटे और हम कहे कि हमारा भारत हिंदू राष्ट्र है तो यह मजाक नहीं तो और क्या होगा? इसलिए पहला मुद्दा तों गौमाता की रक्षा का ही शेष बचता है इसलिए जब हम लाखों सनातनी एक स्वर में भारत सरकार से सविनय प्रार्थना करेंगे कि अब तो गोवंश की हत्या पूर्णरूप से बंद हो जानी चाहिए, गो सेवा और गो सम्मान का कार्य हो ही जाना चाहिए, तो निश्चित सामूहिक प्रार्थना मान ली जाएगी।

लेकिन इस अभियान में दो-चार अड़चनें आ सकती हैं।

1. नेतृत्व कौन करेगा ?
2. किस संगठन के बैनर तले यह काम होगा?
3. चित्र किसका लगेगा ?
4. अध्यक्ष कौन होगा?
5. प्रधान संरक्षक कौन होगा ?
6. उद्बोधनकर्ता कौन होगे ?
7. धन की व्यवस्था कैसे होगी ?

उपरोक्त सभी बिंदुओं पर संतों और गोभक्तों ने मिलकर विचार किया कि पहले जितने आंदोलन हुए 1966, 2012, 2014, 2016, 2018, 2023 में वह सभी अभियान विभिन्न संगठनों के बैनर तले हुए और वह असफल हो गए क्योंकि उनमें संगठन के नाम थे, नेतृत्व करने वाले कार्यकर्ता का परिचय था, उनके नाम और चित्र का उपयोग किया जाता रहा है।

वर्तमान समय में मानव की प्रवृति बन गई हैं कि एक कोई आगे बढ़ता है, तो दूसरा केकड़े की तरह उसकी टांग पकड़ के नीचे खींच लेता है, भले ही अच्छा कार्य हो रहा हो।

इसलिए संतों ने निर्णय लिया कि

इस बार कोई संस्था नहीं होगी,
कोई संगठन नहीं होगा,
कोई नेतृत्वकर्ता नहीं होगे,
कोई संत अगुवाई में नहीं होंगे,
कोई गोसेवक अथवा संत महापुरुष नेतृत्व नहीं करेंगे

इस अभियान के अध्यक्ष होंगे नंदी बाबा और प्रधान संरक्षक होगी भगवती गौमाता ।

गो माता और नंदी बाबा

के अलावा किसी का नाम नहीं रहेगा,
किसी का चित्र नहीं लगेगा,

किसी संस्था और संगठन के बैनर तले और व्यक्ति या संत के नेतृत्व में काम ना होकर, नंदी बाबा की अध्यक्षता और गो माता जी की प्रधान संरक्षता में कार्य होगा। शेष सभी भारतीय संत महापुरुष, गो सेवक भाई बहन धरातल पर अभियान विषयक काम निष्कामतापूर्व देखेंगे। तहसील, जिला, राज्य, दिल्ली और अनशन के इन पांचों क्रमिक स्थानों (प्रयासों) पर उद्बोधन हेतु कोई माइक नहीं रहेगा, कोई मंच नहीं होगा, किसी का कोई उद्बोधन नहीं होगा। मंच और माइक से सारा काम बिगड़ता है। परिणामस्वरूप अभियान की दिशा और दशा दोनों बदल जाती और हाथ लगती है तो सिर्फ..... असफलता।

एक प्रश्न और खड़ा होता हैं कि इतना बड़ा कार्य करेंगे, तो चंदा तो चाहिए। भोजन, प्रचार, प्रवास आदि में खर्च तो लगता ही है तो धन संग्रह किया जाए, परंतु संतो का मानना है कि जब-जब भी गौमाता के कार्य के लिए चंदा इकट्ठा करने की बात आती हैं, तो सैकड़ों लोग उठकर के खड़े हो जाते हैं कि यह तो धंधा कर रहे हैं, पैसा खा रहे हैं, गाय के नाम पर धन इक्कठा कर रहे हैं।

इसलिए संतों ने यह निर्णय लिया है कि यह अभियान भले ही राष्ट्रीय स्तर का है, परंतु वास्तविकता में यह आंदोलन नहीं यह प्रार्थना है और प्रार्थना में चंदे की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसलिए इस कार्य के लिए एक भी रुपया इकट्ठा नहीं किया जाएगा...फिर विचार किया यह कार्य कैसे होगा तो इस समस्या के निवारण के लिए दिल्ली के गोभक्तों ने ऐसा आश्वासन दिया है की 30,000 नहीं.. 50,000 लोग भी अगर वर्षभर के लिए वहाँ पर प्रार्थना करने के लिए एकत्रित होते हैं, तो उनके भोजन की व्यवस्था दिल्ली के गौभक्तों द्वारा घर-घर जाकर भोजन इक्कठा करके, अन्नक्षेत्र द्वारा, लंगर प्रसादी और भंडारों से की जाएगी।

108 प्रचारकों के मार्ग व्यय की व्यवस्था 108 गौभक्त संत एक-एक प्रचारक को गोद लेकर उनकी व्यवस्था करेंगे।

प्रचार प्रसार हेतु पत्रक-होल्डिंग की व्यवस्था, सबंधित क्षेत्र के लोगों द्वारा जारी रहेगी ।

संतों और गो भक्तों द्वारा कही गई यह सारी बातें हमें इतनी अच्छी लगी और अब हम 2 वर्ष तक उन संतों के मार्गदर्शन में अभियान की सफलता सुनिश्चित करने हेतु सेवा में लगे है।

आप भी एक-एक राज्य 8-8 जिला, 1 जिला, 5 तहसील, 1 तहसील में कार्य करने की इच्छा रखते है, तो whatapp नंबर संपर्क करे या नीचे वर्णित बेब साइट पर जाकर अपना फ़ार्म भरे अथवा गो सम्मान आह्वान अभियान हेतु कार्य कर रहे अपने संपर्क वाले गो सेवक से बात करें, जो प्रचार हेतु पत्रक प्रिंट करवाना चाहे, वो नीचे लिखे नंबर पर बात कर मँगवा कर अथवा नीचे लिखी बेब साइट से पीडीएफ और CDR फ़ाइल डाउनलोड करके प्रेस से प्रिंट करवा ले और वितरण करवाए। ध्यान रहे पत्रक में किसी व्यक्ति, संस्था का नाम और सौजन्य में नहीं लिखना है।

पुनः आप सब से प्रार्थना है की आप गो सेवा, गो रक्षा और गो सम्मान हेतु हो रहे,

इस अभियान को सफल बनाने में अपना पूरा सहयोग प्रदान करे।

	जय नंदी बाबा	
	श्री करनला	
	जय गोमाता	
	सेवा	
	सुरक्षा	
	सम्मान	
भूले नहीं याद रखें 27 अप्रैल 2026 {गो सम्मान दिवस}
को प्रात: हम सभी भारतवासियों, गो प्रेमियों को अपने-अपने तहसील/ब्लॉक कार्यालय जाकर तहसीलदार अथवा ब्लॉक अधिकारी के माध्यम से महामहिम राष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री, महामहिम राज्यपाल एवं माननीय मुख्यमंत्री महोदय के नाम का प्रार्थना पत्र तसीलदार अथवा उपखण्ड अधिकारी को देना है
गो सम्मान आह्वान अभियान
गो सम्मान
आह्वान अभियान
All Social Media Address
Gau samman aahvaan abhiyaan

।।अभियान कार्यकारिणी ।।

प्रधान संरक्षक - गौमाता (आद्यशक्ति मां सुरभि)

अध्यक्ष - नंदी बाबा (नीलमणि वृषभदेव)

आशीर्वाद– भारतीय परम्परा के समस्त आराध्य देवी देवता।

सेवा और सहयोग :– भारतीय परम्परा के समस्त आचार्य, मूर्धन्य संत महापुरुष, गो संत, गो भक्त, गोरक्षक, गो सेवक, गो पालक, गो पुत्र, गो वत्स और समस्त गो प्रेमी जन।

।।गो सम्मान आह्वान अभियान के मुख्य उद्देश्य।।

केंद्र सरकार और देश की सभी राज्य सरकारों से राष्ट्र और भारतीय संस्कृति के हित में संविधान के दायरे में रहकर अहिंसक तरीके से प्रार्थना कर गो माता को

(1) सेवा (गो माता को उचित अनुसंधान और अनुदान मिले)

(2) सुरक्षा (भारत से गोहत्या पूरी तरह समाप्त हो)

(3) सम्मान गो माता राष्ट्रमाता (राष्ट्रदेव, राष्ट्रआराध्या, राष्ट्र धरोहर, राष्ट्र आधार बने) का मौलिक अधिकार प्रदान करवाना।

।। गो महिमा।।

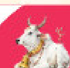

(1) गोमाता 33 कोटि देवी देवताओं की सात्विक शक्ति अपने तन में समाहित रखती हैं।

(2) गोमाता का दूध, दही, घी सात्विक निरापद आहार होने के साथ–साथ दिव्य औषधि भी है।

(3) गोमय और गोमूत्र दिव्य औषधि होने के साथ–साथ विषमुक्त कृषि का मूल आधार है।

(4) भारतीय संस्कृति, परंपरा, संस्कार और जीवनशैली बिना गोमाता के अकल्पनीय है।

(5) राष्ट्र गौरव, राष्ट्र रक्षा, राष्ट्र शांति और राष्ट्र का वास्तविक विकास गोमाता की सेवा सुरक्षा और सम्मान के बिना संभव नहीं है।

सरकार से मुख्य आग्रह

(गोरक्षा संबंधित मुख्य आग्रह)

1. गोमाता को राष्ट्र माता, राष्ट्र देव, राष्ट्र आराध्या, राष्ट्र धरोहर अथवा राष्ट्र आधार का सम्मानित पद प्रदान करें। (गो माता को सम्मान मिले)
2. गो सेवा हेतु केंद्रीय कानून बने । (जिससे संपूर्ण भारतवर्ष में समान रूप से गो सेवा हो सके)
3. भारतवर्ष में गो हत्या पूरी तरह समाप्त हो । (जिससे गो माता पूर्णत: सुरक्षित हो)

(गोगव्य महत्व संबंधित मुख्य आग्रह)

1. गोबर, गोमूत्र को लेकर के बृहद अनुसंधान केंद्र कृषि विश्वविद्यालयों में बने जिससे गोबर, गोमूत्र का कृषि और अन्य उपयोग में महत्व बढे ।
2. गो माता का दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र को बढ़ावा मिले, उस संदर्भ में शासन उचित नीतियां बनाए ।
3. गोबर, गोमूत्र से जुड़े प्रसंस्करण यूनिट को बढ़ावा दिया जाए और नवीन अनुसंधान हो ।
4. रासायनिक कृषि को नियंत्रित कर गो अधारित कृषि को बढ़ावा दिया जाए।
5. सरकारी भवनों और चिकित्सालय में सामान्य पेंट की जगह गोबर पेंट और फिनायल की जगह गोनाईल उपयोग आनिवार्य किया जाए।
6. आयुर्वेदिक चिकित्सालय में पंचगव्य औषधियों का नि:शुल्क वितरण किया जाए।
7. गोबर गोमूत्र से जुड़े उद्यम लगाने के लिए उद्यमियों को प्रेरित करें (किसी भी फैक्ट्री वाले को जमीन देने से पहले यह तय करें, कि उनको गो सेवा से जुड़ा हुआ कोई एक कार्य साथ साथ करना होगा)
8. सरकारी नियंत्रण में चल रहे मंदिरों में भोग, आरती, पूजा और प्रसाद में देशी गोमाता का दूध, दही, घी का उपयोग अनिवार्य किया जाए।
9. बड़े शॉपिंग मॉल में गो आधारित कृषि उत्पाद और देशी गो से संबंधित डेयरी और गोबर गोमूत्र उत्पाद विक्रय हेतु एक काउंटर की अनिवार्यता लागू की जाए।
10. वृषभ आधारित कृषि करने वाले वृषभ धारक किसानो को विशेष आर्थिक सहायता प्रदान की जाए।

(अनुदान एवं चारा संबंधित मुख्य आग्रह)

1. सभी राज्यों में निराश्रित गोवंश हेतु संचालित गौशालाओ को अनुदान प्राप्त हो, जिससे निराश्रित गोवंश की उचित सेवा हो ।
2. चारे की उचित कीमत तय की जाए, चारे के अवैध भंडारण पर रोक लगे जिससे माफिया पर लगाम लगे।
3. घास का उपयोग केवल गो आहार और पशु आहार के रूप में हो, अन्य उपयोग न हो, चारे को फैक्ट्रीयो में जलाने पर प्रतिबंध लगे।
4. देश भर में आरक्षित गोचर भूमि को अतिक्रमण से मुक्त करने हेतु कार्यवाही हो गोचर विकास बोर्ड की स्थापना हो गोचर भूमिका उपयोग केवल गोशाला संचालन और गो चारण हेतु हो।

(गोशाला संबंधित मुख्य आग्रह)

1. भारत के प्रत्येक प्रांत में कम से कम एक-एक गो अभ्यारण्य उपयुक्त वन भूमि या गोचर भूमि पर खोला जाए।
2. प्रत्येक ग्राम पंचायत पर निराश्रित नर गोवंश के लिए नंदीशाला की स्थापना हो ।
3. गौशालाओं को मनरेगा से जोड़ा जाए, ताकि गौशाला में काम करने वाले लोगों को 100 दिन का ग्वाल वेतन मनरेगा से प्राप्त हो एवं मनरेगा योजना के तहत गौशालाओं में निर्माण कार्य हो।
4. सम्पूर्ण देश में गोवंश संख्या के आधार पर गौशालाओं को एक निश्चित बिजली यूनिट निःशुल्क आवंटित हो अथवा बिजली बिल में एक निश्चित प्रतिशत छूट मिले।
5. अधिक दान प्राप्त करने वाले सरकारी नियंत्रण में चल रहे मंदिरों के साथ गौशाला संचालन अनिवार्य किया जाये।
6. महानगरों में बड़े आवासीय क्षेत्र में गौशाला स्थापित करने हेतु बिल्डर को पृथक स्थान छोड़ने के निर्देश जारी किए जाए ताकि वहाँ रहने वाले गोप्रेमियों को गो दर्शन और गो ग्रास का लाभ प्राप्त हो एवं निराश्रित गोवंश को आश्रय प्राप्त हो सके।
7. गोवंश की मृत देह का उचित अंतिम संस्कार हो सके, ऐसा स्थान सरकार उपलब्ध कराए और अंतिम संस्कार (समाधि) की उचित व्यवस्था हो, ताकि गोमाता की मृत देह का अपमान ना हो।

(कानून संबंधित मुख्य आग्रह)

1. गो हत्यारों, गो तस्करी में लिप्त अपराधियों के लिए आजीवन कठोर कारावास जैसी सजा का प्रावधान हो।
2. गो तस्करी में उपयोग आने वाले वाहनों की जब्ती होने पर जमानत न हो व सदा सदा के लिए राजसाद हो और उन्हें नीलाम किया जाए अथवा गौशालाओं को उपयोग हेतु सौंप दिया जाए।
3. कंपनियों के CSR फंड मे से एक निश्चित राशि गो सेवा से जुड़े कार्यो हेतु खर्च करने की अनिवार्यता लागू हो ।
4. सिंगल यूज़ पॉलीथिन केरी बेग के उपयोग पर शक्तिपूर्वक प्रतिबंध लगाया जाए अथवा उसके उपयोग के पश्चात विधिवत निस्तारण किया जाये ।
5. पशु मेलो के नाम पर हो रही अवैध गो तस्करी पर अंकुश लगाने हेतु केंद्रीय क़ानून बने ।

(गो चिकित्सालय एवं विद्यालय से संबंधित मुख्य आग्रह)

1. जिला स्तर पर पृथक से पंचगव्य चिकित्सालयो की स्थापना हो ।
2. विद्यार्थियों को दिए जाने वाले मिड डे मील में देशी गाय माता के ताजा दूध अथवा देशी गाय माता के दूध के पाउडर को शामिल किया जाये ।
3. संस्कृत महाविद्यालयों में गोसेवा प्रकल्प अनिवार्य किए जाये।
4. सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों और महाविद्यालयों में देशी गाय के आर्थिक वैज्ञानिक और धार्मिक महत्व के विषय अनिवार्य किए जाए।
5. राजमार्गों पर होने वाली गो दुर्घटनाओं पर नियंत्रण के उपाय किए जाए, प्रत्येक 50 किमी अथवा प्रत्येक टोल प्लाजा पर घायल गोवंश को तत्काल उपचार मुहैया कराने हेतु गो वाहिनी एम्बुलेंस और गो चिकित्साकर्मी नियुक्त हो तथा प्रत्येक 150-200 किमी पर गो चिकित्सालय की व्यवस्था हो ।

आपसे निम्न सहयोग की अपेक्षा :-

(1) प्रचारक बनकर 2 वर्ष, 6 माह अथवा तीन माह का समय दान कर अभियान विषय को शक्ति प्रदान करे।

(2) गो.स.आ.अभियान में लगे क्षेत्रीय, प्रांतीय, संभागीय अथवा जिला प्रचारक जब आपके क्षेत्र में अभियान का प्रचार करने आए तब उनको भोजन, आवास उपलब्ध करवाकर और आगे प्रस्थान हेतु वाहन से छुड़वाकर, टिकिट करवाकर अथवा वाहन में ईंधन भरवा कर सहयोग कर सकते हैं।

(3) अभियान में प्रचार प्रसार निमित्त बैनर, पोस्टर और पर्चे (पेम्पलेट) छपवा सकते है। प्रिंट हेतु अभियान की वेबसाइट से बैनर, पोस्टर, प्रचार पत्रक की PDF और CDR फाइल डाउनलोड करे। कृपया प्रचार सामग्री पर सौजन्य से, अपना नाम, अपनी संस्था का नाम, अपने संगठन का नाम नहीं लिखे तथा बेनर, पोस्टर, पत्रक के मैटर में परिवर्तन किए बिना यथारूप प्रिंट करवा कर के अपने क्षेत्र में स्वयं वितरित करे अथवा अपने क्षेत्र में कार्यरत प्रचारक को प्रदान कर गो सेवा में सहयोग कर सकते हैं।

(सीडीआर या पीडीएफ फाइल प्राप्त करने हेतु व्हाट्स एप नंबर पर भी मेसेज कर सकते है)

संपर्क और जुड़ाव

गो सेवा और गो रक्षा के माध्यम से होने वाले राष्ट्र रक्षा एव संस्कृति रक्षा के इस निष्काम और पवित्र अभियान में सम्मिलित होने के लिए

(1) अपनी विस्तृत जानकारी भेजें - Whatsapp No. 8239711008

(2) अधिक जानकारी के लिए कॉल करें - 9571712140

(3) अभियान से जुड़ने के लिए मिस कॉल करे - 9067777323

(4) वेबसाइट पर ऑनलाइन फॉर्म भरे - https://www.gausamman.cloud

NO DONATIONS

इस अभियान हेतु किसी भी प्रकार का दान चंदा स्वीकार नहीं किया जा रहा है।
अगर कोई इस अभियान के नाम से दान चंदा मांगे,
तो 8239711008 नंबर पर व्हाट्सएप के माध्यम से शिकायत करें।

अधिक जानकारी हेतु अभियान की वेबसाइट पर विजिट करे

https://www.gausamman.cloud

अभियान के फेसबुक, यू ट्यूब, इन्स्टा, व्हाट्सअप और अन्य सोशल मीडिया अकाउंट के लिए QR कोड स्कैन करे

https://www.gausamman.cloud/socialmedia

ऋषि पंचमी पर जन्मे आज के ऋषि

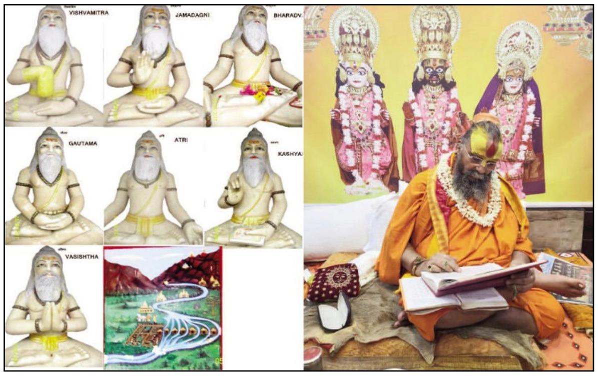

देवदत्त दुबे

प्राचीन काल से ही भारत में ऋषि मुनियों और संतों का विशेष महत्व रहा है। ऋषि मुनि ज्ञान का आधार होते थे जो अपने आश्रमों के द्वारा लोगों को शिक्षित करने समाज को मार्गदर्शन करने के लिए शास्त्रों और स्मृतियों का निर्माण करने जैसे कार्य करते थे। वहीं आज के समय में ऋषि पंचमी के दिन जन्मे मलूक पीठाधीश्वर राजेन्द्रदास जी सनातन परंपरा को आगे बढ़ाने समाज में सामाजिक समरसता बनाए रखने और गो संवर्धन का जिस शिद्दत के साथ कार्य कर रहे हैं उनके अनुयायी उन्हें आज का ऋषि मानते हैं। अनेकों भक्त तो उन्हें सुकदेव जी का अवतार मानते हैं। सप्त ऋषियों की उत्पत्ति जहां ब्रह्मा जी के मानसिक संकल्प से हुई थी वहीं राजेंद्र दास जी का जन्म भाद्रपद शुक्ल पक्ष की पंचमी अर्था ऋषि पंचमी के दिन प्राचीन समय से ही विद्वानों आचार्य और वैदिक ब्राह्मण के घर में मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले के अचरी गांव में हुआ था । राजेंद्र दास जी के पिता का नाम रामस्वरूप जी पांडे जो बहुत ही गुनी पवित्र धार्मिक संत भक्त माने जाते हैं। वहीं माताजी का नाम श्रीमती बृजलता देवी है जबकि रसिक संत अनंत विभूषित गणेश दास जी महाराज से वैष्णो दीक्षा प्राप्त की स्कूली शिक्षा मिडिल तक ही करने के बाद बचपन में ही वृंदावन धाम आ गए और ईश्वर की कृपा से उन्हें सदगुरु देव भक्त माली जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। भक्ति माली जी ने सुदामा कुटी निवास में अपने सानिध्य में वैष्णव परंपरा में शामिल किया और औपचारिक रूप से राजेंद्र दास जी की संस्कृत शास्त्र शिक्षा का प्रारंभ करवाया। उन्होंने ही दीक्षित शिष्य का नाम राजेंद्र दास रखा सुसंस्कृत वैष्णव छात्र राजेन्द्र दास ने संस्कृत व्याकरण विशेषता और साहित्य का क्रमिक अध्ययन किया और मास्टर डिग्री प्राप्त की 8 जनवरी 2018 को जगतगुरु रामानंदाचार्य की जयंती पर तुलसी पितआदिश्वर दिव्यांग विश्वविद्यालय से माननीय राष्ट्रपति महोदय के VISHVAMITRA, JAMADAGNI, BHARADV, ATRI, GAUTAMA, KASHYA, VASISHTHA हाथों से डिलीट की मानक उपाधि प्राप्त की। राजेंद्र दास जी के गुरु अनंत संपन्न गणेश दास जी भक्त माली जी महाराज है। जिनका जन्म नैमिषारण्य की पवित्र धरा पर सीतापुर जनपद के अंतर्गत गोमती गंगा के तट पर बसे कुर्सी गांव में काश्यप गोत्रीय काणकुबज विप्र कुल में पंडित लक्ष्मण प्रसाद त्रिपाठी एवं श्रीमती कैलाशी देवी के गृह में 1918 में हुआ जिनका नामकरण पंडित गया प्रसाद त्रिपाठी के रूप में किया गया।

राजेंद्र दास जी बचपन में स्कूल जाने से मना कर देते थे। उनके स्वभाव से माता - पिता बहुत चिंतित होते थे और विचार करते थे कि बेटा राजेंद्र को कैसे शिक्षा दिलाई जाए जबकि वे बचपन से ही बहुत कुशल और परीक्षण प्रतिभा के धनी थे। 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' की तर्ज पर यह समझ आने लगा था यह बालक भविष्य में महापुरुष बनेगा। जिस तरह बचपन से ही स्वामी विवेकानंद शास्त्र के ज्ञाता संगीत आदि कलाओं बुद्धि वाले थे। आगे चलकर वह एक महापुरुष बने या कहे कि चंद्रगुप्त को देखकर चाणक्य ने कहा यही होगा अखंड भारत का भावी राजा जिस तरह कृष्ण जी के बचपन में चमत्कारों को देखकर लोगों ने कह दिया था । यह जरूर कोई महान व्यक्ति है और जब बड़े हुए तो उन्होंने इस बात को सच साबित कर दिया। जिस तरह हनुमान जी ने बचपन में सूर्य को फल समझकर उसे खाने के लिए चले गए और बड़े हुए तो उनके महान कार्यो ने उन्हें कलयुग का सबसे ज्यादा पूजा जाने वाला भगवान बना दिया। कुछ इसी तरह महाराज जी का जन्म बचपन से ही अध्यात्म की ओर झुकाव फिर अनायास ही श्रेष्ठ गुरु का मिलना जैसी घटनाएं आज सिद्ध कर रही है कि महान संत का जन्म आज देश की अनेकों समस्याओं को समाधान की ओर ले जाने के लिए हुआ था। आज जब सनातन धर्म पर आगे बढ़ने का संकट है, परिवार परंपरा बिखर रही है, गोवंश भीषणत्तम संकट के दौर से गुजर रही है तब राजेंद्र दास जी महाराज समाज को एक कुशल मार्गदर्शन की तरह राह दिखा रहे हैं। इस युग में गौ सेवा के क्षेत्र में महाराज जी का योगदान अतुलनीय है जडखोर धाम पथमेड़ा ओरछा और ललितपुर में चल रही गौशालाओं में लाखों की संख्या में गौ माता की सेवा हो रही है। वहीं उनकी प्रेरणा से हजारों जगह गौ सेवा का कार्य शुरू हुआ है। हजारों की संख्या में दीक्षित शिष्य और लाखों की संख्या में उनके अनुयाई आज समाज में नई जागृति लाने के लिए महाराज जी की बातों का अनुसरण कर रहे हैं।

कुल मिलाकर सप्त ऋषियों के बारे हमने सुना हे पढ़ा है लेकिन महाराज जी को हम देख रहे हैं और अनुभव कर रहे हैं और आधुनिक युग के ऋषि के रूप में उनके प्रति आस्था रख रहे हैं। हित प्रेमानंद जी ने महाराज जी के बारे में बिल्कुल स्पष्ट कहा है कि वही है जो शास्त्र आधारित बात करते हैं महाराज जी किसी प्रकार का चमत्कार नहीं बताते लेकिन यदि उनके प्रवचनों को ध्यान से सुनेंगे तो जीवन में चमत्कार जरूर होगा। जहां न तनाव होगा, ना अवसाद होगा, ना भ्रम होगा। तुलसीदास जी की रामायण की चौपाई महाराज जी पर सटीक बैठती है जिसमें वह कहते हैं 'संत हृदय नवनीत समाना। कहा कविनह पर कहा ना जाना।।' महाराज जी भी यदि दिन-रात परिश्रम कर रहे हैं तो समाज और देश के हित के लिए कर रहे हैं। स्वास्थ्यगत कारणों से चिकित्सकों ने पूर्ण रूप से आराम करने की सलाह दी तब भी महाराज जी कम समय के लिए ही लेकिन लगातार प्रवचनों के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन कर रहे हैं। ऋषि पंचमी को आज उनका जन्म दिवस है। जिसमें सभी ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं की महाराज जी दीर्घायु हो और वर्षों तक समाज का मार्गदर्शन करते रहें क्योंकि कभी कभार ही ऐसे संत जन्म लेते हैं जिनके जन्म से माता-पिता ही नहीं जन्मभूमि ही नहीं बल्कि समूची धरा अपने आप को और गोरांनवित महसूस करती है।

सादगी, प्रेम, सरलता से सम्पन्न व्यक्तित्व हैं राजेन्द्र शुक्ल

श्री राजेंद्र शुक्ल का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा रीवा, मध्यप्रदेश में हुई। रीवा में 3 अगस्त 1964 को जन्मे श्री राजेन्द्र शुक्ल ने युवा अवस्था में ही राजनीति के प्रति अपनी रुचि बता दी थी, जब वे वर्ष 1986 में रीवा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए। वर्ष 1992 में युवा सम्मेलन का आयोजन करने में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही। वे लायंस क्लब रीवा के लंबे समय से सदस्य रहे हैं। भाजपा मध्यप्रदेश की कार्य समिति के सदस्य और मध्यप्रदेश गृह निर्माण मंडल के डायरेक्टर भी रहे हैं। श्री शुक्ल ने वर्ष 1998 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सदस्यता ग्रहण की और प्रदेश कार्यसमिति सदस्य बनाए गए।

राजेन्द्र शुक्ल... मध्यप्रदेश के राजनीतिक क्षितिज में दैदीप्यमान वह प्रकाशपुंज हैं जो उज्जवल भविष्य, चहुंओर विकास को प्रदर्शित करता है। उनका नाम, विकास का भविष्योन्मुखी सोच का परिचायक है। उनकी दूरदर्शी सोच और उस सोच को धरातल में लाने की दृढ़ इच्छाशक्ति और जुझारू व्यक्तित्व उन्हें विशेष बनाता है। जन-जन के विकास के लिए बिना-रुके, बिना-थके सतत प्रयासरत श्री शुक्ल की विनम्रता उनके व्यक्तित्व को असाधारण बनाती है। शिखर पर पहुंचने के बाद भी विनम्र बने रहना सबसे बड़ा गुण है। जहां तक राजेन्द्र शुक्ल जी का सवाल है, उन्हें विनम्रता का पर्याय कहना किसी भी तरह की अतिशयोक्ति नहीं होगी।

नि:स्वार्थ सेवा, अथक परिश्रम, गहन समर्पण, अटूट निष्ठा, जरूरतमंदों की सहायता के लिए सदा तत्परता और लक्ष्य की ओर निरंतर यात्रा ने उन्हें भीड़ में अलग पहचान दिलाई है। वे नवोन्मेषी विचारक हैं। उनकी अंतरात्मा में विचारों की निरंतरता हमेशा गतिशील रहती है। उनके नवाचार की ऊष्मा हर पल नए और विशिष्ट विचारों का जन्म देती रहती है। चुनौतियों और लक्ष्यों से लड़ने की दृढ़ शक्ति उनमें निहित है। सौंपे गए दायित्वों को कुशलता से निभाने की क्षमता का आंकलन कर विरोधी भी उनकी प्रशंसा किए बिना नहीं रहते हैं। कैसी भी बाधाएं, समस्याएं आ जायें, बिना समय व्यर्थ किए, बिना विचलित हुए वे सदैव समाधान के लिए प्रयास करते हैं। श्री शुक्ल का मानना है कि 'अगर आप समाधान का हिस्सा नहीं है, तो आप खुद एक समस्या हैं।' वे मानते हैं कि 'श्रमेण सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै:' अर्थात् श्रम से ही कार्य सिद्ध होते हैं, मात्र इच्छाओं से नहीं। लक्ष्य प्राप्ति के लिए सतत् प्रयास करना सोच से भी महत्वपूर्ण है। सतत् प्रयास से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। यहां रश्मिरथी का यह उद्धरण प्रासंगिक है-

'खम ठोक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पांव उखड़,
मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है...'

राजेन्द्र शुक्ल जी का जीवन संघर्ष और सेवा का जीवंत उदाहरण है, जो हमें प्रेरणा देता है कि कैसे कठिनाईयों और संघर्षों के बीच भी एक व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है और समाज के लिए आदर्श बन सकता है। श्री राजेन्द्र शुक्ल के व्यक्तित्व की उदारता, सहृदयता, संवेदनशीलता और सज्जनता के अद्भुत संयोजन में ऐसा व्यक्तित्व निर्मित हुआ है, जिसने सरल, सहज, उदार, स्नेही व्यक्तित्व की नई इबारत लिखी है। विशाल व्यक्तित्व के धनी का सशक्त पहलू व्यापक विचारधारा है। उनकी चिंतन क्षमता ने उनके व्यक्तित्व में व्यवहारिकता और अध्यात्मिकता का अनूठा संयोजन किया है। उनकी सफलताओं का

आधार उनके करिश्माई व्यक्तित्व और अनूठी सोच है। विचारों की व्यापकता का रुचि-नीति में भी परिलक्षित होती है। उनका यही सेवा-भाव जरूरतमंदों की मदद करने में दिखता है।

श्री शुक्ल में सेवा-संकल्प का समर्पित भाव, चुनौतियों की जिद और जूनून के साथ सामना करने का जज्बा उनके व्यक्तित्व के ऐसे पहलू हैं, जिन्होंने राजनीति को सेवा नीति में बदल दिया है। एक योगी की तरह हर आम-खास की बात, समस्या सुनना, मनन करना और जरूरतमंदों की सेवाभाव से मदद करना उनकी प्राथमिकता में रहता है। उनका यह ऐसा गुण है, जिसमें आम 'जन' के 'मन' से उनका एक गहरा और आत्मीयता पूर्ण रिश्ता बन जाता है।

श्री राजेन्द्र शुक्ल को कभी अपनी छवि निर्माण के लिए प्रयास नहीं करने पड़े। उनके कर्मठ व्यक्तित्व और सरल विनम्र स्वभाव ने उनकी छवि को इतना पुख्ता कर दिया है कि उसे धुंधला कर पाना संभव नहीं है। श्री शुक्ल के व्यक्तित्व का प्रभावी पहलू उनकी विशिष्ट संवाद क्षमता है। वे सीधे और सहज भाव से श्रोताओं के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित कर उनकी समस्याओं का निदान करते हैं। सीधे संवाद की विशिष्ट क्षमता, विचारों की व्यापकता व्यवहार की सहजता, व्यक्तित्व की विशालता का अद्भुत संयोजन का ही नाम श्री राजेन्द्र शुक्ल हैं।

श्री राजेन्द्र शुक्ल असाधारण व्यक्तित्व वाले आम आदमी है। वे दिखते साधारण हैं, लेकिन उनका व्यक्तित्व असाधारण रूप से विशाल और प्रतिभा संपन्न हैं। मानवीय संवेदनाओं, अनुभूतियों से उदार गुणों से भरा दिल है जो हर पल पीड़ित मानवता की सेवा के लिए धड़कता है। वे कार्यों पर जितनी चौकस निगाह रखते हैं, उतनी उनको चिंता है कि

दरवाजे पर आए गंभीर रोग से पीड़ित और हर दुखियारे की मदद कर उसका दु:ख-दर्द दूर किया जाए।

सहजता, सरलता, सौम्यता, शुचिता के साथ ही तत्परता और त्वरित गति से जन-समस्याओं का निराकरण; ये वे गुण होते हैं जो राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति को एक ऊँचे मुकाम तक पहुंचाते हैं। विन्ध्य की धरती पर जन्मे श्री राजेन्द्र शुक्ल के जीवन और उनके व्यक्तित्व-कृतित्व में ऐसे ही गुणों का समावेश है, जो सार्वजनिक जीवन में और राजनीति में काम करने की विशेषताएं होती है, राजनीति उनके लिए सेवा का भाव रही है।

मानव-सेवा के लक्ष्य शिरोधार्य- श्री शुक्ल ने पिता समाजसेवी स्व. श्री भैयालाल शुक्ल के गुणों और संस्कारों का अनुसरण करते हुए स्वयं को ढाला। धीर-गंभीर ऋषि-मुनि मानव सेवा के लक्ष्य में एक तपस्वी की तरह लीन रहना उनका लक्ष्य है। उनकी सेवा भावना की तपस्या को कभी किसी पद का लालच भंग करने का साहस ही नहीं जुटा पाया है। मानव-सेवा के लक्ष्य को शिरोधार्य कर अनवरत प्रयासरत हैं।

कर्मयोगी की साधना- श्री राजेंद्र शुक्ल का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा रीवा, मध्यप्रदेश में हुई। रीवा में 3 अगस्त 1964 को जन्मे श्री राजेन्द्र शुक्ल ने युवा अवस्था में ही राजनीति के प्रति अपनी रुचि बता दी थी, जब वे वर्ष 1986 में रीवा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए। वर्ष 1992 में युवा सम्मेलन का आयोजन करने में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही। वे लायंस क्लब रीवा के लंबे समय से सदस्य रहे हैं। भाजपा मध्यप्रदेश की कार्य समिति के सदस्य और मध्यप्रदेश गृह निर्माण मंडल के डायरेक्टर भी रहे हैं। श्री शुक्ल ने वर्ष 1998 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सदस्यता ग्रहण की और प्रदेश कार्यसमिति सदस्य बनाए गए। व्यवसाय कृषि, तैराकी के शौकीन पहली बार वर्ष 2003 में विधानसभा के लिए चुने गए और राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) आवास एवं पर्यावरण रहे। उसके बाद उन्होंने निरंतर अपनी विजय को बरकरार रखा। योग्य, कुशल प्रबंधन और प्रशासनिक क्षमता के धनी श्री शुक्ल को जब भी जो जिम्मेदारी सौंपी गई, उन्होंने प्रबंधन कौशल का बेहतर प्रदर्शन कर उसे परिणाममूलक बनाया। अपने बेहतर प्रबंधन से राजनेताओं के सामने श्री शुक्ल ने अपनी पहचान को नए-नए आयाम दिए। विवादों से दूर रहकर बिना शोरगुल के काम करते रहने की नीति पर वे चले। राजनीति को राष्ट्र हित में रखते हुए वे राष्ट्रवादी चिंतन के साथ अपने कदम को आगे बढ़ाना चाहते हैं। श्री शुक्ल को तीन कार्यकाल में मंत्रीमंडल में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली। वे मंत्री पद की कसौटी पर भी सदैव खरे उतरे। नेतृत्व के प्रति निष्ठा और राज्य सरकार के लक्ष्यों और कार्यक्रमों को पूरा करने की प्रतिबद्धता श्री शुक्ल की विशेषता है। उनकी कर्मठता और लक्ष्य के प्रति संकल्पबद्धता को शब्दों के रूप में पिरोने के लिए बशीर बद्र की यह ग़ज़ल प्रासंगिक है-

'जिस दिन से चला हूं मेरी मंजिल पे नज़र है,
आंखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा।'

श्री शुक्ल वर्ष 2008 में तेरहवीं विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) वन, जैव विविधता तथा जैव प्रौद्योगिकी, खनिज साधन, विधि और विधायी कार्य और ऊर्जा मंत्री रहे। वर्ष 2009 में ऊर्जा एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्रालय का प्रभार संभालने के पश्चात्, श्री शुक्ल ने गुजरात की ग्राम ज्योति योजना से प्रेरित होकर मध्यप्रदेश में भी अटल ज्योति योजना का शुभारंभ किया। इस योजना के माध्यम से प्रदेश में 24 घंटे निर्बाध बिजली आपूर्ति के लक्ष्य को हासिल किया गया। ऊर्जा मंत्री के रूप में बिजली संकट जूझते हुए मध्यप्रदेश को रोशन करने की उन्हें चुनौती मिली। राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप उन्होंने प्रदेश को बिजली संकट से उबारा। आज मध्यप्रदेश सरप्लस बिजली राज्य के रूप में खड़ा है। वर्ष 2012 में उन्हें मंत्री ऊर्जा, खनिज साधन बनाया गया। वर्ष 2013 में चौदहवीं विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और मंत्री, ऊर्जा, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा, खनिज साधन, जनसम्पर्क, वाणिज्य, उद्योग और रोजगार, प्रवासी भारतीय विभाग का मंत्री बनाया गया। श्री शुक्ल ने जनसंपर्क मंत्री के रूप में भी एक अलग पहचान स्थापित की। पत्रकारों के हित में अनेक योजनाओं को अमली जामा पहनाया। श्री शुक्ल ने उद्योग तथा खनिज विभाग के दायित्व को बखूबी निभाया। वे प्रदेश में औद्योगिक क्रांति का संकल्प लेकर राज्य में उद्योगों का जाल बिछाने का पर कार्य किया। खनिज आधारित उद्योगों की स्थापना तथा राजस्व वृद्धि करने में सफलता पायी। वर्ष 2018 में चौथी बार विधानसभा सदस्य निर्वाचित हुए। श्री शुक्ल ने 26 अगस्त 2023 को कैबिनेट मंत्री के पद की शपथ ग्रहण की। मंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं जनसंपर्क विभाग रहे। वर्ष 2023 में पांचवीं बार विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए और 13 दिसम्बर 2023 को उप मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। वर्तमान में प्रदेश के हर क्षेत्र हर नागरिक तक सुलभ और उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच स्थापित करने के लिए वे कार्यरत हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में अधोसंरचना विस्तार, चिकित्सकीय और सहायक चिकित्सकीय मैनपॉवर और उपकरणों की उपलब्धता के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। उनका लक्ष्य मध्यप्रदेश को स्वास्थ्य के विभिन्न मानकों पर देश में शीर्ष पर ले जाना है। यह लक्ष्य बड़ा चुनौतीपूर्ण हैं पर कहते हैं न-

'कौन कहता है कि आसमां में सुराख नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो'

नि:संदेह कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। मध्यप्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था जम्मेिदार और कुशल हाथों में है। इसके सुखद परिणाम शीघ्र ही परिलक्षित होंगे।

विंध्य क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए हर क्षेत्र में किए प्रयास- रात-दिन विन्ध्य के विकास का सपना देखने वाले श्री राजेन्द्र शुक्ल ने अपनी जन्म-भूमि विन्ध्य के विकास के प्रति अपने दायित्व को बखूबी निभाया। उन्होंने विन्ध्य क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पर्यटन विकास को अपनी प्राथमिकता में रखा है। अपने क्षेत्र के विकास के लिए उनके ड्रीम प्रोजेक्ट्स मुकुन्दपुर व्हाईट टाईगर सफारी, चाकघाट से इलाहाबाद और हनुमना से बनारस फोर-लेन का निर्माण, हवाई पट्टी अथवा गुढ़ में विश्व का सबसे बड़े 750 मेगावाट सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना हो। श्री शुक्ल ने रीवा के चौतरफा विकास में विशेष रुचि ली

है। इसी के चलते रीवा विकास शहर के रूप में उभरा है। रीवा सहित पूरे विन्ध्य को यातायात और संचार के साधन मिलने के लिए उन्होंने कायाकल्प करने का संकल्प लिया है। रीवा बायपास न होने से यातायात अव्यवस्था से दुर्घटनाएं होती थीं। चोरहटा से रतहरा बायपास बनवाकर रीवा में यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ किया। श्री शुक्ल ने अपने समाजसेवी पिता स्व. श्री भैयालाल शुक्ल की प्रेरणा से रीवा में स्थित लक्ष्मण बाग गौ-शाला को आदर्श गौशाला बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अपनी तमाम व्यस्तता के बाद भी श्री शुक्ल लक्ष्मण बाग गौ-शाला में जाकर गायों की सेवा कर अपने पिता स्व. श्री भैयालाल शुक्ल जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

उनके नेतृत्व और प्रयासों से रीवा और विन्ध्य क्षेत्र को नई पहचान मिली है और वे निरंतर अपने क्षेत्र के विकास के लिए कार्यरत हैं। नवकरणीय ऊर्जा मंत्री रहते हुए, उन्होंने रीवा में एशिया के सबसे बड़े सोलर प्लांट की स्थापना की और इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकार्पित किया। श्री शुक्ल ने व्हाइट टाइगर को विन्ध्य क्षेत्र के मुकुन्दपुर वन क्षेत्र में वापस लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह क्षेत्र 46 वर्षों से व्हाइट टाइगर से वंचित था, जो कि विन्ध्य क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण राजनैतिक और भावनात्मक मुद्दा रहा है। वर्ष 2014 में स्थापित इस जू में आज भी हजारों देशी-विदेशी पर्यटकों का आकर्षण बना हुआ है।

श्री शुक्ल रीवा सहित विंध्य क्षेत्र के विकास के कार्यों में सदैव सक्रिय रहे हैं। रीवा में एयरपोर्ट सुविधा के लिए उनके प्रयास फलीभूत हुए और विध्य की देश के अन्य हिस्सों से कनेक्टिविटी बेहतर हुई है। वे संभागीय मुख्यालय को महानगर बनाने की दिशा में भी सक्रिय हैं। उनके मंत्रिमंडल कार्यकालों के दौरान, वाणसागर के पानी से रीवा और विंध्य क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा में सतत वृद्धि हुई है। श्री शुक्ल के प्रयासों से रीवा में तालाबों और जल संरचनाओं का सौंदर्यीकरण और पुनरुद्धार हुआ है। उन्होंने सड़क, पुल, रिंग रोड, मठ, मंदिर, तीर्थ स्थलों का जीर्णोद्धार भी करवाया है। उन्होंने खाली पड़ी एवं अनुपयोगी जमीनों में पार्क और बागों का निर्माण करवाया है। रीवा विधानसभा के 41 गांवों को डी.पी.आई.पी. से जोड़कर करीब 42 स्वसहायता समूह के माध्यम से 41 गांवों में मछली पालन, सब्जी उत्पादन, दुग्ध डेयरी सहित अन्य रोजगार हेतु करीब 20 करोड़ से अधिक की राशि ग्रामीणों को उपलब्ध कराई गयी। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में तेज गति से विकास हुआ।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी विशेष अभिरुचि रही है। जगह-जगह वृक्षारोपण और ईको-पार्क, नगर वन तथा एपीएस वन का निर्माण करवाया है। युवाओं के खेलकूद के लिए उन्होंने विश्व स्तरीय मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाई और स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का निर्माण कराया। बीहर नदी में रिवर फ्रंट का निर्माण भी उनके प्रयासों का परिणाम है। श्री शुक्ल के प्रयासों से संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के रीवा परिसर की स्वीकृति, भवन निर्माण एवं संचालन के कार्य को मूर्तरूप देने का कार्य किया। रीवा विधानसभा में करीब 50 से अधिक विद्यालय भवन विहीन थे, विद्यालय पेड़ों के नीचे संचालित थे। वहां अभियान चला कर भवन निर्माण करवाया। 50 वर्ष से उन्नयन की बाट जोह रहे 5वीं से 8वीं करीब 25 विद्यालयों का उन्यन कराया गया। शिक्षा और संस्कृति के प्रति यह उनका समर्पण प्रदर्शित करता है। श्री राजेंद्र शुक्ल गौ-सेवा के कार्यों के लिए सदैव प्रयासरत रहे हैं। उनके द्वारा गौ-सेवा में जनमानस की सहभागिता एवं प्रयासों को आर्थिक रूप से लाभकारी बनाने की दिशा में प्रयास किए गये हैं। बसामन मामा गौ-अभयारण्य गायों की देखभाल और संरक्षण के उत्कृष्ट प्रयासों का मूर्त मॉडल है।

श्री शुक्ल स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता के महत्व को जानते हैं और सदैव इस दिशा में प्रयास करते रहे हैं। श्री शुक्ल के नेतृत्व में स्वच्छ रीवा-स्वस्थ रीवा मिशन के तहत नगर पालिक निगम रीवा में करीब 20 से अधिक सुलभ शौचालय का निर्माण कराया गया है, साथ ही अभियान चलाकर नगर पालिक निगम रीवा के अन्तर्गत जितने भी शुष्क शौचालय थे उनके स्थान पर जलरहित शौचालय निर्माण आन्दोलन चलाया गया था। स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के लिए उन्होंने जि़ला चिकित्सालय का उन्नयन, सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल का निर्माण और चिकित्सकों की नियुक्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किये हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था को मज़बूत करने के लिए वे सतत प्रयास कर रहे हैं, ताकि हर क्षेत्र के नागरिकों को उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएं सुलभता से प्राप्त हो सकें।

और अंत में श्री शुक्ल की सोच और संकल्प को रेखांकित करती हुई दो पंक्तियां -

भीड़ में भीड़ बनकर रहे तो क्या रहे
भीड़ में अपनी निजी पहचान होनी चाहिए।

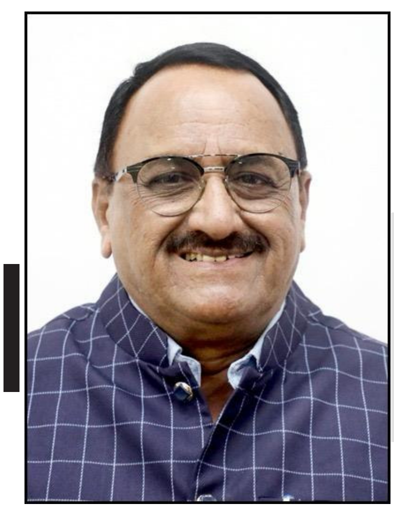

सैय्यद ताहिर अली
सेवानिवृत्त संयुक्त संचालक
जनसम्पर्क विभाग,
मध्यप्रदेश

परिसर के प्रमुख प्रकल्प

आधुनिक गौवंश शेड

मुख्यमंत्री गौ-सेवा योजना और मनरेगा के समन्वय से वैज्ञानिक पद्धति से निर्मित विस्तृत 14 गौवंश शेड है जहाँ गौवंश को प्राकृतिक और स्वच्छ वातावरण मिलता है।

पशु चिकित्सालय

जिला खनिज गौ निधि से आधुनिक पशुचिकित्सालय स्थापित है, जहाँ गौवंश का स्वास्थ्य परीक्षण, टीकाकरण व उपचार होता है।

बायोगैस संयंत्र

स्वच्छ भारत मिशन-गोवर्धन योजना अंतर्गत 85 क्यूबिक मीटर क्षमता का बायोगैस संयंत्र स्थापित है, जो ऊर्जा आत्मनिर्भरता और खेती हेतु पोषक स्लरी प्रदान करता है।

वर्मी कम्पोस्ट इकाइयाँ

गौवंश के गोबर से वैज्ञानिक तरीके से उच्च गुणवत्ता की जैविक खाद तैयार की जाती है, जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है।

चारा उत्पादन क्षेत्र

गौवंश की पोषण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समर्पित चरागाह और चारा भंडारण केंद्र।

सराहनीय अधोसंरचना

स्वच्छ भारत मिशन-गोवर्धन योजना अंतर्गत 85 क्यूबिक मीटर क्षमता का बायोगैस संयंत्र स्थापित है, जो ऊर्जा आत्मनिर्भरता और खेती हेतु पोषक स्लरी प्रदान करता है।

सादर

आमंत्रण

|| श्रीसीताराम ||

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त गौभक्त एवं गौ कथा वाचक

श्रीमद् जगद्गुरु द्वाराचार्य अग्रपीठाधीश्वर एवं

श्री मलूकपीठाधीश्वर

श्री स्वामी राजेंद्र दास देवाचार्य जी महाराज

श्री रेवासा धाम - श्री वृन्दावन धाम

के पावन सान्निध्य में

गौ कथा एवं गौ आधारित प्राकृतिक खेती विषयक आयोजन

जिसमें आप सादर आमंत्रित हैं

दिनांक : 12, 13 एवं 14 फरवरी 2026

समय : प्रतिदिन दोप. 2 से सायं 5 बजे तक

स्थान : बसामन मामा गौवंश वन्य विहार, पुरवा, सेमरिया, रीवा

Scan & Pay

UPI ID : 80202101@ubin

BASAMAN MAMA GAUVANSH

इस दिव्य आयोजन के माध्यम से गौ संरक्षण,
गौ आधारित प्राकृतिक खेती एवं सनातन मूल्यों को
नई दिशा और सशक्त प्रोत्साहन मिलेगा।

राजेन्द्र शुक्ल

उप-मुख्यमंत्री, म.प्र. शासन